

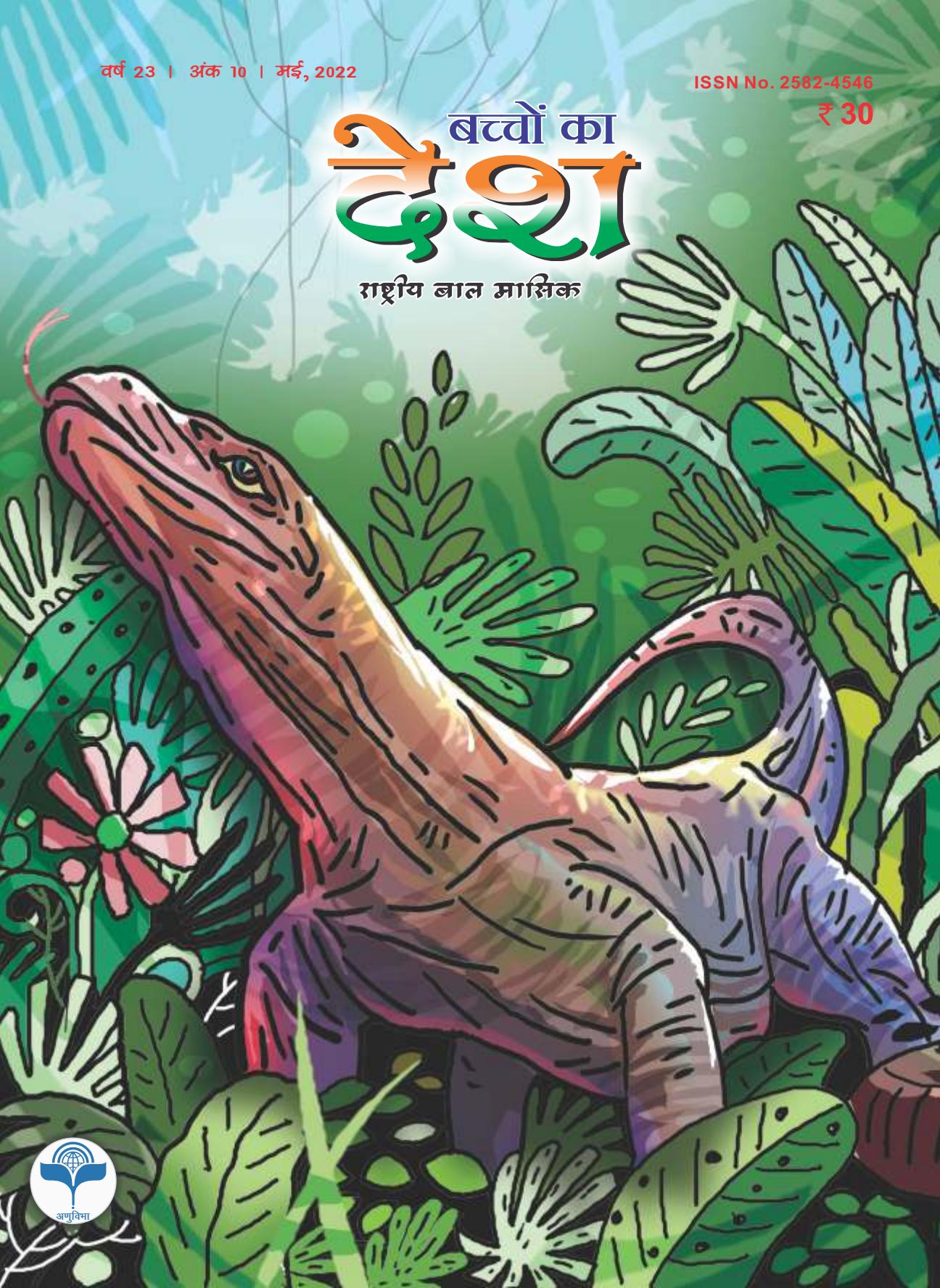
वर्ष 23 | अंक 10 | मई, 2022

ISSN No. 2582-4546

₹ 30

बत्यों का देश

राष्ट्रीय बाल मासिक



क्या आप जानते हों ?

डीप ड्राइव दुबई

यह दुबई में जमीन के 60 मीटर (200 फीट) नीचे बना डाइविंग पूल है। यह दुनिया का सबसे गहरा स्विमिंग पूल है जिसमें 1.40 करोड़ लीटर ताजा पानी उपयोग में लिया जाता है। इसे जुलाई 2021 में जनता के लिए खोला गया।



अरसेनालना मेट्रो स्टेशन

यूक्रेन में कीव मेट्रो का एक स्टेशन है अरसेनालना। यह जमीन में 105.5 मीटर (346 फीट) नीचे बना दुनिया का सबसे गहरा स्टेशन है। इसे 1960 में बनाया गया था। हाल ही में चल रहे रूस-यूक्रेन युद्ध में बम हमलों से बचने के लिए लोगों ने यहां शरण ली।



रायफारस्ट टनल, नोर्वे

958 फीट गहराई में बनी यह 14.3 किलोमीटर लम्बी टनल दुनिया की सबसे गहरी सड़क टनल है। 30 दिसम्बर, 2019 को तैयार हुई यह टनल नोर्वे के रोगालैण्ड राज्य में स्थित दो द्वीपों को जोड़ती है।



एमपूनेंग गोल्डमाइन

दक्षिण अफ्रीका के गोटेंग प्रान्त में स्थित यह दुनिया की सबसे गहरी सोने की खान है। जमीन से 13120 फीट नीचे इस खान में पहुँचने में 1 घण्टे का समय लग जाता है। यहाँ का तापमान 66 डिग्री सेल्सियस तक होता है। मनुष्य पृथ्वी में 40 हजार फीट नीचे तक छेद करने में ही सफल हुआ है क्योंकि उस गहराई में तापमान 180 डिग्री सेल्सियस तक पहुँच जाता है।



कहाँ क्या?

अंक विशेष

सुमित्रानन्दन पंत
होनहार बच्चे : मानस बाम
तम्बाकू निषेद्य दिवस
कहानी सर्कस की
क्रिकेट की रोमांचक घटनाएँ

: सीमा जैन 'भारत'
: शिखर चन्द जैन
: डॉ. गोपाल राजगोपाल
: शिवचरण चौहान
: अनिल जायसवाल

— 11
— 14
— 26
— 34
— 38



कहानी



चम्पा की पूनम	:	रजनीकान्त शुक्ल	— 07
मजदूर एकता जिन्दाबाद	:	ललित शौर्य	— 09
दादाजी की धरोहर	:	छाया अग्रवाल	— 15
पेड़ की सुनो	:	उमेश कुमार चौरसिया	— 19
अबूझ पहेली	:	मुनिश्री चैतन्यकुमार 'अमन'	— 22
माँ जीत गई	:	डॉ. ज्योति शर्मा	— 23
अकल आई दलदल में	:	इंद्रजीत कौशिक	— 31
सेब का पेड़	:	वंदना गुप्ता	— 35
पंछी हए फुर्र	:	मनोहर चमोली 'मनु'	— 39

कविता-गीत

किससे पूछे	:	राजपाल सिंह गुलिया	— 06
मेरी तो जान है माँ	:	प्रवीण कुमार सहगल	— 10
हौसलों की उड़ान	:	सुरेशचंद्र सर्वहारा	— 10
राम राधेबा राणे	:	डॉ. वेद मित्र शुक्ल	— 13
मेरा लंचबॉक्स	:	गौरी शंकर वैश्य 'विनम्र'	— 18
अहा रसगुल्ला	:	डॉ. फहीम अहमद	— 18
आम	:	रमेशचंद्र पंत	— 30
मौसम गरमी का	:	डॉ. भैरूलाल गर्ग	— 46
मेरे घर को भी घर बोलो :	:	शादाब आलम	— 46



विविधा

वर्ग पहेली : परितोष पालीवाल	— 17	चित्र पहेली	:	चाँद मोहम्मद घोसी	— 25
दिमागी कसरत : प्रकाश तातेड़	— 21	I like the most	:		— 47
बूझो तो जानें : वसीम अहमद नगरामी	— 24	How I did it	:		— 47

स्तम्भ

क्या आप जानते हो? — 2, सम्पादक की पाती — 05, महाप्रज्ञ की कथाएँ — 06, जीवन विज्ञान के प्रयोग — 08, नई कलम — 14, दस सवाल : दस जवाब — 29, प्रेरक वचन, अन्तर ढूँढ़िये — 30, आओ पढ़ें : नई किताबें — 32, सुखोकू — 37, पढ़ो और जानो, उत्तरमाला — 41, कलम और कूँची — 42, नहा अखबार — 44, जन्मदिन की बधाई — 47, चित्र कथा — 48, किड्स कॉर्नर — 50, बच्चों का कलब — 51



बच्चों का देश

आष्ट्रीय बाल मासिक

वर्ष - 23 अंक - 10 मई, 2022

प्रकाशक

अनुव्रत विश्व भारती
सहयोगी संस्थान
भागीरथी सेवा प्रन्यास

सम्पादक | संचय जैन
98290 52452
कार्यालय | चन्द्रशेखर देराश्री

सह सम्पादक | प्रकाश तातेड
93515 52651
ग्राफिक डिजाइन | गजेन्द्र दाहिमा

प्रबन्ध सम्पादक | निर्मल राँका
पंचशील जैन
पिंत्रांकन | वेणु वरियाथ

सम्पादकीय कार्यालय

अनुव्रत विश्व भारती (अनुविभा)
चिल्ड्रन'स पीस पैलेस
पोस्ट बॉक्स सं. 28
राजसमन्द - 313324 (राजस्थान)
bachchon_ka_desh@yahoo.co.in
9414343100

सदस्यता शुल्क

एक प्रति : 30 रु.

वार्षिक : 300 रु.

त्रैवार्षिक : 800 रु.

पंचवार्षिक : 1200 रु.

दस वर्ष : 2400 रु.

पंद्रह वर्ष : 7000 रु.

(कोरियर द्वारा 300रु अतिरिक्त प्रतिवर्ष)
विदेश के लिए वार्षिक शुल्क \$ 20

प्रकाशक मुद्रक व सम्पादक

संचय जैन द्वारा अनुव्रत विश्व भारती
सोसायटी, राजसमन्द के लिए प्लेजर
डिजिटल प्रेस, 10, गुरु रामदास
कॉलोनी, उदयगुर (राज.) से मुद्रित एवं
चिल्ड्रन'स पीस पैलेस, राजसमन्द
से प्रकाशित

ISSN No. 2582-4546

नकद / चैक / ऑनलाइन

UPI

RAZOR PAY
<https://rzp.io/l/uGTBPsRrx>



Send Payment Information On Whatsapp No. 9116634513

'बच्चों का देश' मासिक में प्रकाशित रहना वित्र सहित समस्त सामग्री के प्रकाशन का सर्वधिक सुरक्षित है। लिखित अनुमति प्राप्त कर इनका उपयोग किया जा सकता है। समस्त कानूनी मामलों का न्याय क्षेत्र केवल राजसमन्द होगा।

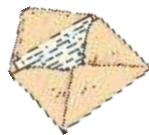
www.anuvibha.org

www.bachchonkadesh.com

www.facebook.com/bkdpage



सम्पादक की पाती



प्यारे बच्चों,

इस रविवार 17 अप्रैल को उदयपुर में रहने वाले आप जैसे ही 'बच्चों का देश' के बाल पाठकों से मिलने का अवसर मिला। बच्चों से मिलना, बात करना हमेशा खुशी देने वाला होता है। लेकिन, इन बाल पाठकों से मिलकर लगा कि हम तो एक ही परिवार के सदस्य हैं, 'बच्चों का देश' परिवार के...

सबकी सोच बहुत ही सकारात्मक थी। बातचीत में बहुत आनंद आया और बहुत कुछ सीखने को भी मिला। इस चर्चा को आयोजित किया 'बच्चों का देश' के सह संपादक श्री प्रकाश तातेड़ ने, जिन्होंने बच्चों से 'दिमागी कसरत' भी कराई, जिसे बच्चों ने बहुत पसंद किया।

मैंने बच्चों के सामने एक प्रश्न रखा- 'दुनिया से जाने के बाद लोग आपको किस रूप में याद करें?' एक जवाब आया अच्छे इंसान के रूप में। वहाँ उपस्थित प्रत्येक बच्चे ने इस बात का ही समर्थन किया और उनके साथ आएँ अभिभावक भी इससे सहमत थे।

इस जवाब से ही दूसरा प्रश्न सामने आया- दुनिया का हर बच्चा, उसके अभिभावक, शिक्षक सब यहीं चाहते हैं कि वह एक अच्छा इंसान बने, फिर दुनिया में इतने बुरे इंसान क्यों हैं? इस प्रश्न पर लम्बा चिंतन चला और प्रत्येक बच्चे ने इसके अपने कारण बताए। क्या सावधानियाँ रखनी चाहिए, इस पर भी बातें हुईं। बच्चों के ही विचार आप सब पाठकों के लिए यहाँ प्रस्तुत कर रहा हूँ-

- ❖ बुरे लोगों की संगत नहीं करनी चाहिए।
- ❖ भेड़ चाल नहीं चल के अपने चिंतन से काम करना चाहिए।
- ❖ जो भी काम करें उसमें आनंद (FUN) का अनुभव करना चाहिए।
- ❖ लालच से बचना चाहिए।
- ❖ Thoughts को कंट्रोल नहीं करने से गलत रास्ते पर चले जाते हैं।
- ❖ हम जो भी करें सोच समझ कर करें।
- ❖ Out of Box सोचना चाहिए और अपनी Creativity से कुछ नया जोड़ना चाहिए।
- ❖ गुस्से में React नहीं करना चाहिए।
- ❖ हमारे पास कुछ होगा, तभी हम दूसरों को दे पाएँगे।
- ❖ Do something logical and different and control your thoughts.
- ❖ Don't be like others] be yourself.

बच्चों, आप सब बहुत अच्छे हो। बस अच्छा बने रहने के लिए हर पल, हर दिन ध्यान रखना है कि हमसे ऐसा कोई काम नहीं हो जो हमें गलत रास्ते पर ले जाएँ। यदि गलती से कुछ ऐसा हो भी जाए तो उसे ठीक करने और दुबारा न हो, इसका पूरी सजगता के साथ प्रयास करना है। बहुत बहुत शुभकामनाएँ।

आपका ही,
संचय

इस चर्चा गोष्ठी में शामिल बच्चे

जेनिथ, पाखी, धनिष्ठा, अर्चित, देवयानी, आयुष, युवांशी, पुलकित, विश्वा, कृष्णा, श्रिया, अनुष्का, काव्यांशी, प्रियांशी

महाप्रज्ञ की कथाएँ

प्रभु के साथ

गुरु और शिष्य जा रहे थे। जंगल आ गया। गुरु एक वृक्ष के नीचे बैठ गए। ध्यान में लीन हो गये। शिष्य गुरु के पास बैठा था। उसने देखा— एक शेर उधर ही आ रहा है। भयभीत होकर वह पेड़ पर चढ़ गया। वृक्ष पर चढ़कर उसने गुरु से कहा— “गुरुदेव! बब्बर शेर आ रहा है। वह बड़ा भयंकर है। आप भी वृक्ष पर चढ़ जाइये अन्यथा वह आपको मार देगा।”

गुरु ने शिष्य की बात सुनी। उन्होंने कोई उत्तर नहीं दिया और मौन रहे। इतने में ही शेर आ गया। उसने गुरु को सूंधा और चला गया। शिष्य पेड़ से नीचे उत्तर गया। गुरु ने ध्यान पूरा किया। दोनों साथ—साथ आगे चल पड़े। दोनों कुछ ही दूर चले थे कि गुरु को एक मच्छर ने काट डाला। गुरु ने उसे हटाया। कान को खुजलाया और बोले— “कितना दर्द हो रहा है!”

शिष्य बोला— “गुरुदेव! अजीब बात है। शेर आया तब आप शांत बैठे थे और एक छोटे—से मच्छर के काटने से आप घबरा रहे हैं। इसका क्या कारण है?” गुरु ने कहा— “जब शेर आया तब मैं अपनी आत्मा के साथ था, अपने प्रभु के साथ था और अब मैं तुम्हारे साथ हूँ।”

कथाबोध- प्रभु के ध्यान में असीम शक्ति होती है। जो व्यक्ति को हर मुसीबत से मुकाबला करने की ताकत देती है।

एक चूहे ने गजराज से प्रश्न अजब कर डाले।

कितने मन तुम चारा खाते,
कितने जल से रोज नहाते।
'पेटू—पेटू' कहकर तुमको
क्या साथी भी नहीं चिढ़ाते ॥
तुम जैसे बच्चे को ममा
कैसे पोसे पाले...

किससे पूछे ?

राजपाल सिंह गुलिया
इन्जिनर (हरियाणा)

*कुंजर = हाथी

खरा कहूँ या तुम हो खोटे।

एक साल में इतने मोटे।
कौन बताए? किससे पूछें?
हम काहे को इतने छोटे?

मुझको तो लगते ये सारे
कुदरत के घोटाले...

मैं हूँ अच्छा खाता—पीता,
खूब मजे से जीवन जीता।
साथ खड़े हो लगता ऐसे
पास बेर ज्यों बड़ा पीता।।
ठीक नहीं है भेदभाव ये
ओ जग के रखवाले...

कुंजर* बोला— सुनो भ्रात जी,
एक राज की कहें बात जी।
सारी बातें वंशागत ये
नहीं किसी से पक्षपात जी।।
गोरे काले सभी उसी के
उसके खेल निराले...

जो

धपुर, राजस्थान के अमला गाँव में एक किसान खेतसिंह रहता हैं। 2 नवम्बर 2009 को खेतसिंह और उसकी पत्नी को घर के किसी काम से बाहर जाना था। अब घर में साढ़े छह साल की चम्पा कंवर अपने भाई बहनों के साथ रह गई थी। पिता और माता के जाते ही वे सारे बच्चे खेलने में लग गए। उनका घर धास फूस का झोपड़ीनुमा था।

वे लुकाछुपी का खेल खेल रहे थे। उनके साथ अपने भाई बहन और पड़ोस के दो बच्चे भी खेल रहे थे। चम्पा की एक छोटी सात महीने की बहन थी जिसका नाम पूनम था। वह झोपड़ी में सो रही थी।

अब चम्पा सब बच्चों को खोज रही थी। उनमें से कोई झोपड़ी के पीछे छुपा हुआ था तो कोई झोपड़ी के अन्दर। चम्पा ने अब उन्हें ढूँढ़ना शुरू किया। नन्ही चम्पा देखने में तो छोटी उम्र की थी मगर वह बड़ी होशियार साहसी लड़की थी। उसने जल्दी ही सबको बिना आउट हुए खोज लिया। इसके बाद दूसरा बच्चा बाकी बच्चों को खोजने लगा। काफी देर तक यह खेल चलता रहा। अचानक पता नहीं कैसे झोपड़ी में से धुआँ निकलने लगा। खेलते हुए बच्चों ने इस पर ध्यान नहीं दिया।

चम्पा की पूनम



जब झोपड़ी की आग बढ़ गई तो उसके आसपास खेलने वाले वे बच्चे डर गए और जलती हुई आग को देख झोपड़ी से दूर भाग गए। वे अब उस जलती हुई आग को देखने लगे। झोपड़ी की लकड़ी और धास फूस तेजी से आग पकड़ती जा रही थी।

तभी चम्पा को झोपड़ी के अन्दर लेटी नन्ही सात महीने की पूनम की याद आई। उसने कहा—“अरे, पूनम तो अन्दर ही लेटी है।” इस समय तक आग की लपटों से झोपड़ी पूरी तरह घिर चुकी थी। जिसे देखकर उसके भाई बहनों की उस धधकती हुई आग में कूदने हिम्मत नहीं हो पा रही थी। चम्पा चिल्लाई—“चलो, पूनम को बचाना है, नहीं तो वह जल जाएगी।” “नहीं, नहीं, ऐसे में कैसे जाएँ? ऐसे में अगर हम झोपड़ी के अन्दर गए तो खुद ही जल जाएँगे।”—उसके भाई बहनों ने कहा।

चम्पा ने देखा कि उनके किसी भाई बहन की हिम्मत अन्दर जाकर अपनी बहन पूनम को बचाकर लाने की नहीं हो रही है। उसकी ओँखों के आगे नन्ही पूनम का चेहरा आ गया। तभी उसे पूनम के रोने की आवाज सुनाई दी। उसके चेहरे पर कठोर निर्णय की चमक आ गई। वह तेजी से कदम बढ़ाते हुए झोपड़ी की लपलपाती हुई आग की लपटों के बीच होती हुई देखते ही देखते अन्दर घुस गई।

साथ में खड़े हुए भाई और बहनों के मुँह से एक जोर की ‘आह’ निकल गई। अब वे दम साधे उस आग से जलती झोपड़ी और उससे निकलने वाली लपटों की ओर देख रहे थे। वे आग की लपटें जला के शरीर को झुलसा रहीं थी।

मगर वह हिम्मत करके अन्दर घुसी। बचती बचाती वह जैसे तैसे पूनम के पास तक पहुँची।

उसने रोती हुई पूनम को उठाया और बाहर

देखें पृष्ठ 13...

ठीवन विज्ञान के प्रयोग

जब हम संकल्प पूर्वक समय—बद्ध श्वास को लेते हैं और समय—बद्ध ही श्वास छोड़ते हैं, तब यह लयबद्ध प्राणायाम कहलाता है। जब चित्त को श्वास में लगाते हैं, तब यह लयबद्ध श्वास प्रेक्षा बन जाता है। यह श्वास को दीर्घ करने का एक सुन्दर उपाय है।

सुखासन, अर्ध—पद्मासन या पद्मासन में बैठें, मेरुदंड और गर्दन को सीधा रखें। आँखें कोमलता से बन्द करें। श्वास प्रेक्षा की तीन विधियाँ निम्नोक्त हैं —

प्रथम विधि -

1— अपने चित्त को नाभि पर केन्द्रित करें। जब श्वास लें तब पेट फूले और श्वास छोड़ें तब पेट की मांस पेशियों को पूरी तरह भीतर ले जावें। ध्यान रहे जितने समय में श्वास लें, उतने समय में ही उसे छोड़ें। विशेष अभ्यास के लिए जितने समय श्वास लें, उससे दुगने समय में छोड़ें।

2— नाभि पर होने वाले बदलाव को पूरी जागरूकता और रुचि से प्रेक्षा देखें, अनुभव करें।

3— अगर विचारों के आने से प्रेक्षा (देखना) छूट जाए तो जागरूकता पूर्वक चित्त को पुनः प्रेक्षा में लगा दें। विचार स्वयं समाप्त हो जायेंगे। कम से कम 10 मिनट तक यह प्रयोग करें।

द्वितीय विधि -

1— चित्त को दोनों नथुनों के भीतर स्थापित करें। आते और जाते श्वास की प्रेक्षा करें।

2— एक भी श्वास बिना जानकारी के न बाहर जाए, न भीतर आए।

3— पूरी जागरूकता एवं तन्मयता से प्रेक्षा करें।



4— अगर विचार आते हों तो उन्हें देखें, रोके नहीं। चित्त को पुनः श्वास प्रेक्षा में लगा दें। विचार अपने आप समाप्त होते जायेंगे, इसे कम से कम 10 मिनट तक करें।

तृतीय विधि -

1— चित्त को श्वास पर स्थापित करें। श्वास लयबद्ध चले। जितना लम्बा श्वास लें उतना ही लम्बा श्वास छोड़ें।

2— श्वास लेते समय चित्त श्वास के साथ भीतर जाए। श्वास के स्पर्श एवं भीतर के स्पन्दनों का अनुभव करें। श्वास छोड़ते समय श्वास के साथ चित्त बाहर आए। श्वास भीतर, चित्त भीतर। श्वास बाहर, चित्त बाहर।

3— पूरी जागरूकता एवं तन्मयता बनाए रखें।

4— अगर चित्त भटक जाए तो पुनः श्वास प्रेक्षा में लगा दें। भटकन स्वयं समाप्त हो जाएँगी।

आज आजाद पार्क में बहुत सारे लोग इकट्ठा थे। वहाँ पैर रखने की भी जगह नहीं थी। शाम के लगभग 5 बजे होंगे। चारों ओर से लोग आते ही जा रहे थे। पार्क के बीचों बीच एक बड़ा सा पांडाल लगाया गया था। जिसमें एक माइक और पोडियम भी लगा हुआ था। मंच पर मेज और कुर्सियाँ लगी थी। पार्क में जमा भीड़ लगातार मजदूर एकता जिन्दाबाद के नारे लगा रही थी।

उन सब में गजब का उत्साह था। दिखने में सभी लोग सामान्य लग रहे थे। उन्होंने कटे-फटे, पुराने कपड़े पहने हुए थे। लेकिन उनके चेहरों में चमक थी। ओजस अपने दादा जी के साथ रोज इसी पार्क में टहलने आता था। वो आज भी दादाजी के साथ पार्क आया हुआ था। लेकिन उसने इससे पहले ऐसा माहौल कभी नहीं देखा था। इतनी भीड़ और ऐसा जोश देखकर वह रोमांचित हो रहा था।

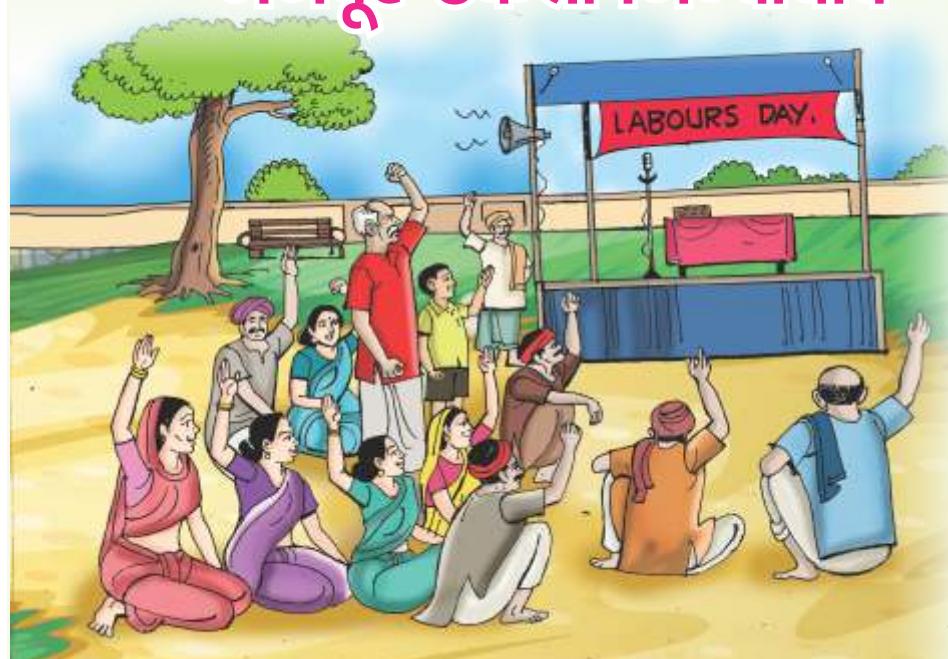
ओजस ने अपने दादाजी से पूछा—“दादाजी आज पार्क में इतनी चहल—पहल क्यों है? ये कौन लोग हैं?” दादाजी बोले—“बेटा ओजस! ये सब मजदूर हैं। जो हमारे दैनिक जीवन में हमारे विभिन्न कार्यों में सहायता करते हैं।” “ओह! अच्छा, तो ये

मजदूर लोग हैं। वही जो पिछले दिनों हमारे घर बनाने में भी मदद कर रहे थे। जब हमारे घर की छत पड़ी थी, तब भी बहुत सारे लोग आये थे।” ओजस ने कहा। “हाँ। तुम सही समझे। ये मजदूर लोग बड़े मेहनती होते हैं। हमारे घर, दुकानें, बड़े-बड़े शॉपिंग मॉल, मंदिर, भवन सभी के निर्माण में इनकी बड़ी भूमिका रहती है। इसके अलावा भी आये दिन छोटे-मोटे कामों में भी ये हमारी सहायता करते हैं। जैसे गैस का सिलेंडर लाना, दाल—चावल, गेहूँ के कट्टे आदि को घर तक पहुँचाना सभी काम करते हैं।” दादाजी ने बताया।

“जी दादाजी। मैं रोज इनको देखता रहता हूँ। स्कूल जाते समय भी ये लोग कहीं न कहीं काम करते हुए दिख जाते हैं। सर्दी, गर्मी, धूप, बरसात हर समय इनको काम करते हुए देखा जा सकता है। क्या इनको मौसम का कोई असर नहीं होता?” ओजस ने कहा। “बेटा ये भी हमारी तरह इनसान ही हैं। इन्हें भी मौसम प्रभावित करता है। ठंड और गर्मी का अहसास इन्हें भी होता है। परन्तु ये अपने परिवार को चलाने के लिए ये सब करते हैं। इन्हें भी अपने बच्चों की इच्छाएं पूरी करनी होती हैं। जैसे आपके पापा आपके लिए खिलौने, चॉकलेट—बिस्कुट आदि लाते हैं, ठीक इसी तरह ये भी दिन भर काम करने के बाद शाम को अपने बच्चों के लिए चीजें ले जाते हैं।” दादाजी ने बताया।

“दादाजी एक बात मेरी समझ में नहीं आ रही है। आज ये सब यहाँ क्यों इकट्ठा हुए हैं? ये सब नारेबाजी क्यों कर रहे हैं?” ओजस ने

मजदूर एकता जिन्दाबाद



देखें पृष्ठ 13...

मेरी तो जान है माँ



सुख दुःख जो भी मिलते हमको
उसे करें स्वीकार।

फूलों से भी प्यार करें हम
काँटों से भी प्यार॥

हम जीवन में विपदाओं से
कभी न मानें हार।
करें सामना उनका अपनी
क्षमता के अनुसार॥

कोशिश करने वालों के ही
खुले लक्ष्य के द्वार।
गिरते—पड़ते चढ़ जाती है
चींटी भी दीवार॥

लाँघ राह की बाधाओं को
जो बढ़ती जलधार।
स्वागत करता उसका सागर
अपनी बाँह पसार॥

नित पूजा करूँ उसकी
मेरी भगवान है माँ।
बिन उसके अधूरा मैं
मेरी तो जान है माँ॥

दिया जन्म मुझे उसने
बड़े लाड़ों से पाला है।

अँधेरी रात जीवन ये
रोशन वो उजाला है।
मैं खामोश हूँ तो भी
बोलती जुबान है माँ॥...

जब कभी नींद न आयी
गाकर लोरी सुलाया।
गोदी में बिठा मुझको
अपना आँचल झुलाया॥
सीने से लगा लेती
ममता की खान है माँ॥...

दिल में दबा हो मेरे
ज्यों कोई राज गहरा।
हर दर्द मेरा जाने
पढ़ लेती वो चेहरा॥
उलझे हुए जीवन का
एक समाधान है माँ॥...

बेटा बनूँ में तेरा
जन्म जितने भी पाऊँ।
छोटा सा बच्चा बनकर
तेरी ही गोद आऊँ॥
पूरे कर देती सभी
मेरे अरमान है माँ॥...

प्रवीण कुमार सहगल
फरीदाबाद (हरियाणा)

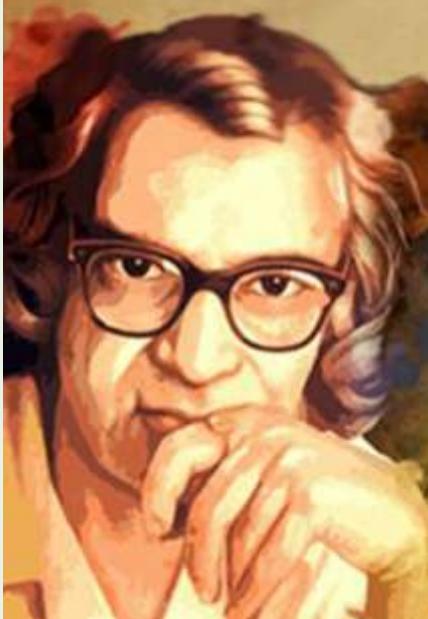
हौसलों की उड़ान

सुरेश चन्द्र 'सर्वहारा'
कोटा (राजस्थान)

लगा पेड़ की छाया जैसा
जिसको तपता थार।
खिल जाते उसके जीवन में
सुख के कमल हजार।

पंख टूटने पर भी खुद को
समझें ना लाचार।
भरें हौसलों से उड़ान हम
दूर क्षितिज के पार॥





प्रकृति प्रेमी, आधुनिक महान कवि:

सुमित्रानन्दन एंट

शिक्षा और साहित्य

सुमित्रानन्दन की प्रारंभिक शिक्षा अल्मोड़ा में हुई। उसके बाद 1918 में वह अपने भाई के साथ काशी आ गए और वहाँ क्वींस कॉलेज में पढ़े। काशी में पंत जी, सरोजिनी नायडू और रवींद्र नाथ टैगोर के काव्य के साथ-साथ अँग्रेजी की रोमांटिक कविता से भी प्रभावित हुए और उन्होंने कविता प्रतियोगिता में भाग लेकर प्रशंसा प्राप्त की थी।

सरस्वती पत्रिका में प्रकाशित होने पर इनकी रचनाओं ने अपना नाम कमाया था। वर्ष 1919 में महात्मा गांधी के सत्याग्रह से प्रभावित होकर उन्होंने अपनी शिक्षा अधूरी छोड़ दी और स्वाधीनता आन्दोलन में सक्रिय हो गए। उन्होंने हिन्दी, संस्कृत, अँग्रेजी और बांग्ला का अध्ययन किया।

उन्हें प्रकृति से बहुत लगाव था। प्राकृतिक सौंदर्य से भरी हुई जगह कौसानी ने उनके बाल मन पर एक सुन्दर छाप छोड़ी। जिससे उनका मन कविताओं की तरफ आकर्षित हुआ।

देखो, यह उनकी लिखी एक कविता की पंक्तियाँ हैं...

मैं नहीं चाहता चिर सुख,
मैं नहीं चाहता चिर दुःख,
सुख-दुःख के खेल मिचौनी,
खोले जीवन अपना मुख!

सुख-दुःख के मधुर मिलन से,
यह जीवन हो परिपूरन;
फिर घन ओझल हो शशि,
फिर शशि से ओझल हो घन!

कितनी सुन्दर बात लिखी है ना! इस कविता में बाल कवि ने कहा है— “मैं नहीं चाहता हूँ सिर्फ सुख या सिर्फ दुःख। अँधेरे के बाद उजाला और उजाले के

बच्चों, आज हम एक ऐसे ही बालक की बात कर रहे हैं। जिसने अपना नाम बदल लिया, जो उन्हें पसन्द नहीं था। जिनके जन्म के कुछ घंटों के बाद ही उनकी माँ चल बरसी थी आज हम उसी बालक के जीवन वृत्त के बारे में जानते हैं। मुझे पूरा विश्वास है कि इस बालक के जीवन से आप प्रेरित होंगे। यह बालक, जो आगे जाकर एक विद्युत लेखक बने। जिन्होंने अपना, अपने परिवार ही नहीं देश का नाम भी रोशन किया।

जन्म और जुदाई

जन्म नाम गुसाई दत्त का जन्म कसौली गाँव, जिला अल्मोड़ा, उत्तराखण्ड में 20 मई 1900 को हुआ था। सात भाई—बहनों में वह सबसे छोटे थे। जिनकी माँ, सरस्वती देवी उनके जन्म के कुछ घंटे बाद ही चल बरसी थी। दादी ने जिनका पालन-पोषण किया। इन्हें अपना नाम पसन्द नहीं आया और इन्होंने अपना नाम सुमित्रानन्दन रख लिया। यह वह नाम है जो हिंदी साहित्य में एक प्रकृति प्रेमी, सफल लेखक और कवि के रूप में आज भी चमकता है।

सुमित्रानन्दन को माँ का लाड़—प्यार तो नहीं मिला मगर उन्होंने अपने जीवन के अभाव को कभी अपनी प्रतिभा के आड़े नहीं आने दिया। उनके पिता का नाम गंगा पंत था।

बाद अँधेरा आता है और इसी से जीवन पूरा होता है। सुख-दुःख भी जीवन में ऐसे ही चलते रहते हैं। हमें जो नहीं मिला उसका दुःख कभी नहीं करना, जो मिला है उसे देखना—समझना और आगे बढ़ना ही जीवन है। पंत की कविताएँ जीवन में शक्ति का संचार करती हैं। आशा जगाती हैं। विश्वास से अपनी बात कहती हैं।

साहित्य से अनुराग

सात वर्ष की उम्र से ही इस बालक ने कविताएँ लिखनी आरम्भ कर दी थी। 1916 में ‘गिरजे का घंटा’ नामक पहली रचना लिखी थी। इलाहाबाद के मेयर कॉलेज में आने के बाद इनकी साहित्य की रुचि बहुत विकसित हुई। 20 वर्ष की उम्र में इनकी रचनाएँ ‘उच्छवास’ और ‘ग्रंथि’ नामक पत्रिकाओं में प्रकाशित होने लगी थी। 27 वर्ष की उम्र में ‘वीणा’ और ‘पल्लव’ नाम के इनके दो काव्य संग्रह प्रकाशित हुए। इन्होंने ‘रूपाभ’ नामक एक प्रगतिशील विचारों वाले पत्र का सम्पादन भी किया।

‘कला और बूढ़ा चाँद’ पर उन्हें साहित्य अकादमी पुरस्कार, लोकायतन पर नेहरू शांति पुरस्कार, चिंदंबरा पर भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार मिला था। भारत सरकार ने सुमित्रानन्दन पंत को पद्म भूषण की उपाधि से भी अलंकृत किया। भारत सरकार ने उनकी स्मृति में एक डाक टिकिट भी जारी किया है। जिस पर उनकी फोटो और पीछे कौसानी की खूबसूरत वादियाँ हैं।

उन्होंने ‘हार’ नाम से एक उपन्यास भी लिखा था। रजत रश्मि, शिल्पी और ज्योत्सना उनके लिखे नाटक थे। बांग्ला और अँग्रेजी से प्रभावित होने के कारण इन्होंने अपने लेखन में गीतात्मक शैली अपनाई थी। इनका लेखन बहुत ही सरल और मधुर रहा। पंत जी सौंदर्य के उपासक थे। प्रकृति, नारी और कलात्मक सौंदर्य उनकी अनुभूति के केंद्र में रहे।

इनका काव्य जीवन प्रकृति चित्रण से ही शुरू हुआ था। इसी कारण इन्हें प्रकृति का सुकुमार और कोमल भावनाओं से युक्त कवि भी कहा जाता है। 1942 में उनका सम्पर्क अरविन्द घोष से हुआ। अरविन्द आश्रम में रहने के बाद उनमें आध्यात्मिक चेतना का विकास हुआ था। उन्होंने आजीवन अविवाहित रहने का निश्चय किया था।

यादें और संग्रहालय

उत्तराखण्ड में कुमाऊँ की पहाड़ियों पर बने कौसानी गाँव में जहाँ उनका बचपन बीता था, वहाँ उनका घर आज सुमित्रानन्दन पंत ‘साहित्यिक विथिका’ के नाम से संग्रहालय में परिवर्तित हो चुका है। इस संग्रहालय में उनके वस्त्र, चश्मा, कलम और

उनकी व्यक्तिगत वस्तुएँ सुरक्षित रखी गई हैं। इसी संग्रहालय में उनके ज्ञानपीठ पुरस्कार का प्रशस्ति पत्र भी मौजूद है और उनकी कुछ पांडुलिपि भी यहाँ रखी हुई हैं। हरिवंश राय बच्चन से उनके पत्र व्यवहार की प्रतिलिपि भी यहाँ मौजूद है।

वह छायावादी युग के कवि थे। उन्हें हिंदी साहित्य का वड्सर्वर्थ कहा गया है जिन्होंने अपनी रचना के माध्यम से भाषा को संस्कार देने का भी काम किया। उनकी अन्तिम कृति गीतहंस रही। उन्होंने आत्मकथा संस्मरण भी लिखा जिसका नाम—‘60 वर्ष एक रेखांकन’ है।

उनके लेखन में परिस्थितियों का प्रभाव बहुत ज्यादा पड़ा। प्रारम्भ की रचनाओं में छायावाद का झुकाव दिखाई देता है। जहाँ प्रकृति ने उनके काव्य को एक मजबूती और एक दिशा दी। 18 वर्ष की उम्र तक वे छायावादी रहे। स्वतन्त्रता आन्दोलन के दौरान वह मानवता को बहुत नजदीक से देखने लगे। वह मार्क्स और लेनिन की विचारधारा से प्रभावित हुए और वह प्रगतिवादी लेखक कहलाने लगे। बाद में

देखें पृष्ठ 21 पर...





परमवीर चक्र विजेता



राम राघोबा राणे

'चम्पा की पूनम' पृष्ठ 7 का शेष....

निकलने के लिए पलट पड़ी। लेकिन अब बाहर आना इतना आसान नहीं था। आग की लपटों ने उसके बाहर जाने के रास्ते को पूरी तरह बन्द कर रखा था। फिर भी उसने हिम्मत करके कदम आगे बढ़ाया मगर अफसोस इस बीच झोपड़ी की छत से लकड़ी का एक जलता हुआ टुकड़ा उसके ऊपर गिर पड़ा। उसका ध्यान बाहर के दरवाजे की ओर लगा था। इसलिए ऊपर से आने वाली यह मुसीबत उसे दिखाई नहीं दे सकी और वह उसकी चपेट में आ गई।

उसने कोशिश की कि पूनम उसके हाथ से कहीं गिर न जाए। उसे बचाने के चक्कर में वह उसी जलती लकड़ी की गिरफ्त में आ गई और पूनम समेत उसके साथ-साथ ही नीचे गिर गई। चम्पा ने उसके नीचे से निकलने की बहुत कोशिश की मगर अपने इस प्रयास में वह सफल न हो सकी। बेदर्द आग की लपटों ने उसे अपने लपेटे में ले लिया। बाहर खड़े भाई बहन चम्पा के आने की प्रतीक्षा कर रहे थे जिसे अब कभी नहीं आना था। अपनी प्यारी बहन पूनम को बचाने की कोशिश में चम्पा ने अपना बलिदान कर दिया था।

चम्पा की इसी बलिदानी भावना को सम्मानित करने के लिए भारतीय बाल कल्याण परिषद की उच्च स्तरीय कमेटी ने उसे मरणोपरांत वर्ष 2010 का राष्ट्रीय बाल वीरता पुरस्कार प्रदान किया।

रजनीकान्त शुक्ल
गाजियाबाद (उत्तर प्रदेश)

भारत के वीर सैनिकों के पथ पर जब आई बाधाएँ, तब राम राघोबा राणे जैसे सैनिक थे आगे आएँ।

नदियों पर पुल थे बने हुए दुश्मन ने उनको ढहा दिया, बारूदी सुरंग बिछा ढेरों सड़कों को भी था नष्ट किया।

कैसे फिर काश्मीर रक्षा भारत के सैनिक कर पाएँ, सेना औ उनकी तोपें भी किस तरह सबक अब सिखलाएँ?

तब परमवीर राणे ने ही अवरोधों को था दूर किया, अत्यन्त शौर्य और साहस से सबका दिल बच्चों! जीत लिया।

डॉ. वेद मित्र शुक्ला, नई दिल्ली

'मजदूर एकता जिन्दाबाद' पृष्ठ 9 का शेष....

पूछा। "बेटा, प्रत्येक वर्ष 1 मई को मजदूर दिवस मनाया जाता है। इसकी शुरुआत सन् 1886 ई. में शिकागो से हुई थी। भारत में ये 1 मई सन् 1923 ई. से मनाया जाने लगा। इस दिन मजदूर संगठन बड़े-बड़े कार्यक्रम आयोजित करते हैं जिसमें मजदूरों के अधिकारों की बातें कहीं जाती हैं। इस दिन मजदूरों की एकता देखने को मिलती है।"

"ओह! ये बात है। आज शायद यहाँ पार्क में भी यहीं सब किया जायेगा।" ओजस ने पूछा। "हाँ। उधर देखो माइक लगा हुआ है। अभी मजदूर नेता जल्दी ही पांडाल में पहुँचेंगे। उनका स्वागत किया जायेगा। उसके बाद वो भाषण देंगे।" दादाजी ने कहा। "अच्छा अब समझा।" ओजस बोला।

अचानक ओजस की नजर सड़क की तरफ मुड़ी। मजदूर नेता आ चुके थे। सभी मजदूर उनके लिए जिन्दाबाद के नारे लगा रहे थे। नेताजी ने मंच पर पहुँचते ही माइक से तीन बार 'मजदूर एकता जिन्दाबाद' के नारे लगवाएँ। इसके बाद नेताजी का भाषण शुरू हो गया था। ओजस और दादाजी ने कुछ देर भाषण सुना, उसके बाद वे घर को चल दिए। ओजस आज बड़ा खुश था। उसे एक नई बात पता चली थी। उसने सोच लिया था कि कल स्कूल में, ये बात अपने सारे दोस्तों को बतायेगा।

ललित शौर्य
मुवानी पिथौरागढ़ (उत्तराखण्ड)

बैंगलुरु (कर्नाटक) के बेथनी हाई स्कूल का विद्यार्थी मानस बाम अपने अनूठे ऐप के कारण न सिर्फ कर्नाटक बल्कि देश के कई राज्यों में गरीब छात्रों का चहेता दोस्त बन चुका है। गरीब बच्चे ट्यूशन पढ़ने के लिए पैसे कहाँ से लाएँगे? यह चिन्ता हमेशा सताती थी मानस बाम को। लेकिन वह आम बच्चों की तरह सिर्फ चिन्ता करके नहीं रह गया। उसने एक संगठन बनाया और “सीख” नामक ऐप बना डाला। इसके माध्यम से देश के किसी भी हिस्से में रहने वाले गरीब बच्चे मुफ्त में ट्यूशन पढ़ने वाले शिक्षकों से जुड़ सकते हैं। छात्र जरूरी विषयों के ट्यूशन के लिए वीडियो कॉलिंग का सहारा ले सकते हैं। वर्तमान में इस ऐप से 50 से ज्यादा टीचर और 90 से ज्यादा स्टूडेंट जुड़ चुके हैं और यह देश के 15 राज्यों में विस्तार पा चुका है।

तकनीक का शौकीन

मानस तकनीक के अध्ययन का शौकीन है। उसका कहना है कि— “इसके माध्यम से घर बैठे बहुत सारे काम किए जा सकते हैं जो आज के वक्त की जरूरत है। इससे समय, पैसे और ऊर्जा की बचत होती है। मानस मशीन लर्निंग के कांसेप्ट को भी विस्तार देना चाहता है।” मानस आगे चलकर आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस सिस्टम बनाना चाहता है। वह ऐसा आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस विकसित करना चाहता है जो हमारे लिए जरूरी मूलभूत कार्यों को अंजाम दे सके। मानस का कहना है कि बच्चों को शुरू से ही कोडिंग और प्रोग्रामिंग जैसी जरूरी चीजें सिखा देनी चाहिए ताकि वे कंप्यूटर के उपयोग और उसे रखरखाव में पारंगत हो सकें। उसकी योजना है कि वह आगे चलकर बच्चों के लिए ऐसा कोई ऐप

गरीब बच्चों की पढ़ाई के लिए बनाया ऐप मानस बाम

बना सके जो उनके लिए उपयोगी हो। वह स्टीव जॉब्स की इस बात से प्रभावित है कि हमें सीखना चाहिए कि कंप्यूटर को कैसे प्रोग्राम किया जाता है क्योंकि यह हमें सिखाता है कि हम सोचें कैसे?

माता पिता और एलन मस्क हैं आदर्श

मानस अपनी सबसे बड़ी प्रेरणा माता—पिता को मानता है क्योंकि उन्होंने ही उसे नैतिक मूल्यों की शिक्षा दी। सम्भवतः इसी वजह से उसके मन में गरीब बच्चों की मदद का विचार आया। साथ ही वह एलन मस्क से बहुत प्रभावित है। उसने उनकी बातों से टाइम मैनेजमेंट सीखा है। साथ ही मानवता की सेवा की प्रेरणा भी उसे एलन मस्क से मिली है।

शिखारचन्द्र जैन
कोलकाता (प.बंगाल)



नई कलम



बिल्ली मौसी आई थी घर,
दिन था मंगल—बुध।
घर को गन्दा कर डाला
मैंने देखा खुद ॥

लगी नाचने झूम—झूमकर,
पीकर घर का पूरा दूध।
गटक के सारा दूध,
करने लगी उछल कूद ॥



उठाई लाठी, दिखाई उसको,
भागी सर पर रख कर पाँव।
जाकर सामान पैक किया,
छोड़ चली वह मेरा गाँव ॥

हर्षित राज
कक्षा- 8, पटना (बिहार)

ते

हेमू के कमरे में एक अलमारी थी। जो बरसों से बन्द पड़ी थी। बस कभी—कभार जब सफाई होती, तभी उसका सामान बाहर निकाला जाता और फिर उसी तरह वापस रख दिया जाता। माँ ने एक बार बताया था— “यह तुम्हारे दादा जी की अलमारी है। इसमें उन्हीं का सामान है जो उनकी धरोहर है। किसी भी चीज को मत छूना, ना ही खराब करना। नहीं तो दादाजी को दुःख पहुँचेगा।”

यही वजह थी कि हमेशा हेमू को अपना मन मारना पड़ा। चाह कर भी उसने कभी अलमारी को नहीं खोला। दादाजी को गुजरे हुए कई साल बीत चुके थे। आज भी घर में उनका उसी तरह सम्मान होता था। जैसा उनके जीवित रहने पर होता था। दादाजी को पढ़ने और लिखने का बहुत शौक था। जब तक वह जीवित थे, हमेशा या तो पढ़ते थे या कुछ नया रचते थे। आज हेमू को दादाजी की बहुत याद आ रही थी। वह अपने बिस्तर पर लेटा हुआ अलमारी को देख रहा था। उसे लगा जैसे अलमारी उसको बुला रही है। वह धीरे से बिस्तर से उठा और अलमारी को खोल दिया।

अलमारी के खुलते ही अन्दर से एक आवाज आई— “हेमू ! हमें बाहर निकालो हमारा यहाँ दम घुटा है।” यह आवाज सुनकर वह चौंक गया। एक दुबली—पतली किताब बहुत ही दुःखी आवाज में कह

रही थी। “पर तुम तो दादाजी की धरोहर हो। माँ कहती है, तुम्हें सँभाल के रखना है।” जबसे दादाजी गए हैं, हमें किसी ने खोलकर भी नहीं देखा। देखो, देखो हेमू ! कितनी धूल है हमारे ऊपर, जो दिन—रात हमें काटती रहती है।” दूसरी पुस्तक बोली।

हेमू ने हाथ से छूकर देखा सचमुच उसके ऊपर तो बहुत सारी धूल थी। उसने झट से कपड़ा लाकर उसे साफ किया। साफ करते ही वह किताब थोड़ा सा मुस्कुराई। फिर उदास होकर कहने लगी— “हेमू देखो हमारे पन्ने कितने चिपक रहे हैं और पीले भी पड़ गए हैं। बहुत समय से इसमें हवा नहीं लगी है। हमारी तरफ किसी का ध्यान ही नहीं जाता। उस रोज सफाई के बाद रामू ने ऐसे टूँसा था कि देखो हेमू, उस हरी किताब का बाहरी कवर मुड़ गया था और उस दिन से आज भी वैसा ही मुड़ हुआ है। इसलिए अक्सर हरी किताब को मैंने कराहते हुए देखा है।”

हरी किताब दर्द को सहन करते—करते सो गई थी। उन दोनों की वार्तालाप से उसकी आँख खुल गई। उसने कहा— “हेमू मुझे सीधा कर दो ना।” हेमू ने उसे निकाल कर सीधा किया और मेज पर रख दिया। पंखे की हवा में किताब के पन्ने फड़फड़ाने लगे। यह देखकर हेमू बहुत खुश हो गया। उसे उसका सुकून देखकर राहत मिल रही थी। पतली किताब को भी उसने मेज पर रख दिया। दोनों अरसे के बाद बस छुए

जाने से ही बहुत खुश हो गई थी।

हेमू ने देखा पीछे की तरफ एक काली मोटी सी किताब जो बेजान सी दबी पड़ी है। उसने उन दोनों से पूछा— “क्या यह काली किताब सो रही है?” पतली किताब ने कहा— “नहीं हेमू ये काली किताब बहुत दिनों से बीमार है। अब तो वह हम लोगों से बात भी नहीं करती।

दादाजी की धरोहर



एक समय था जो वह सबको हँसाती रहती थी। तुम्हें याद होगा, जब दादाजी उदास होते थे तो काली किताब को पढ़कर हँस दिया करते थे। और यही नहीं इसके अन्दर जो फार्मूले लिखे हैं इतने सटीक है कि रोता हुआ व्यक्ति भी सब भूलकर हँसते—हँसते लोटपोट हो जाए।

“हाँ मुझे याद है रात को सोते समय अकसर दादा जी इसी को पढ़कर हमें हँसाया करते थे। कभी—कभी तो लगता कि जैसे किताब गुदगुदी कर रही है।” कह कर हेमू ने हाथ बढ़ाकर उसको उठा लिया। हेमू के छूते ही वह कराह उठी और उसके ऊपर का कवर अलग हो गया है। हेमू ने बड़ी सावधानी से उसको सँभाला तो उसका दिल भर आया।

हेमू ने कहा—“काली किताब क्या हुआ? तुम रो क्यों रही हो?” “हेमू तुम ही बताओ मैं रोज़ नहीं तो क्या करूँ? मैं हमेशा सबको हँसाती रही और आज मैं बीमार हूँ तो कोई मेरे साथ नहीं है। मैं बिलकुल अकेली पड़ी हूँ। मैं और बाकी सभी किताबें घर के सभी लोगों के व्यवहार से बहुत दुःखी हैं। हेमू अब हमसे उपेक्षा सही नहीं जाती, अब आगे हमारा क्या होगा? क्या हमें पूरा जीवन अलमारी में ही कैद रहना पड़ेगा? क्या कभी कोई हमें नहीं पड़ेगा? बताओ हमारी गलती क्या है?”

तभी हरी किताब के उड़ते हुए पन्नों ने उसको ढाँढ़स बँधाते हुए कहा—“आओ बहन! तुम भी आ जाओ, देखो आज मुझे कितना अच्छा लग रहा है।

हेमू ने हमें बाहर निकाला है।“ हेमू ने काली किताब को भी मेज पर उन्हीं के साथ रख दिया। सभी बहुत खुशी थी। हेमू ने गोंद और नया कवर लाकर काली किताब की मरम्मत की। अब वो बिलकुल ऐसी दिख रही थी जैसे कि किसी बच्चे ने नए कपड़े पहने हो और खुशी से इतरा रहा हो।

धीरे—धीरे हेमू ने सभी किताबों को बाहर निकाला और उन सभी के साथ दोस्ती की। फिर उन्हें करीने से साफ कर सजा दिया। हेमू ने उन सभी से बादा किया कि आज के बाद वह अकेली नहीं हैं। उसने पतली किताब को पढ़ना शुरू किया तो वह खुशी से पागल हो गई। उस पर लिखे हुए अक्षरों को हेमू की आँखों से ऊर्जा मिल रही थी और वह फिर से जीने लगी थी। बाकी किताबों में भी आशा की किरण जगी थी कि अब उन्हें भी पढ़ा जायेगा और हेमू की आँखों से उन्हें भी ऊर्जा मिलेगी। फिर वे पहले की तरह बिलकुल ठीक हो जायेंगी।

हेमू ने रोज एक किताब पढ़ने का निश्चय किया और मन ही मन सोचा ‘अब मैं किसी भी किताब को मरने नहीं दूँगा। मेरी आँखों से अगर इनको जीवनदान मिलता है तो मैं रोज एक किताब को पढ़ूँगा और सभी को पुनः जीवित कर लूँगा। दादाजी की धरोहर को मरने से बचा लूँगा। मेरे दादाजी को यही सच्ची श्रद्धांजलि होगी। सुबह होते ही हेमू की आँख खुल गई। रात का सपना याद आते ही वह अलमारी की तरफ दौड़ पड़ा।

छाया अग्रवाल
बरेली (उत्तर प्रदेश)

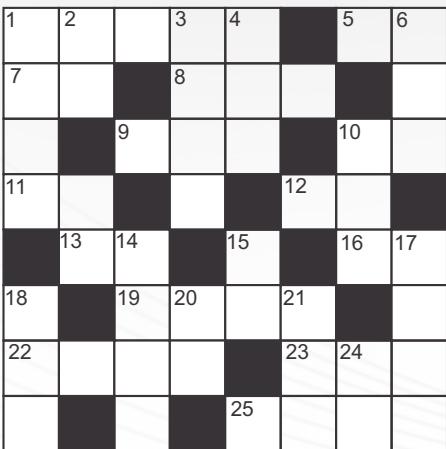
मनोरंजक चित्र पहेली

ध्यान से देखो और बताओ कि यहाँ कुल कितने खरगोश चित्रित हैं।



भू
अंक
पृष्ठ
अंतर

चाँद मोहम्मद घोसी, मेड़ता सिटी (राजस्थान)



बर्ग पहेली



- परितोष पालीवाल
कांकरोली (राजस्थान)

बाएँ से ढाएँ

1. महात्मा गांधी का नाम (3,2)
5. मुकुट, सिर पर रखा जाने वाला सम्मान सूचक आभूषण। (2)
7. धूल, मिट्टी (2)
8. लङ्घ, भगवान गणेश की पसन्दीदा मिठाई (3)
9. चेहरा, मुख (3)
10. सम्मान, गौरव, मर्यादा (2)
11. चिट्ठी, पत्र (2)
12. एक खुशबूदार, पान ठंडाई आदि में डाला जाने वाला मुखवास (2)
13. लाख, सहस्र के बाद का गणना अंक (2)
16. अंधकार, अँधेरा। (2)
19. जैन धर्म का प्रसिद्ध मंत्र (4)
22. अल्प काल, थोड़ा समय (2,2)
23. जिसे सुनाई न दे (3)
25. द्वार, दीवार में आने जाने के लिए छोड़ा गया रास्ता (4)

उपर से नीचे

1. कृष्ण के मुकुट की कलंगी (2,2)
2. मुसलमानों की तीर्थ यात्रा (2)
3. भगवान कृष्ण का एक नाम (4)
4. भवन, घर, आलय, गृह (3)
6. युवा, भारतीय सैनिक (3)
10. मुसीबत, परेशानी, तकलीफ पड़ना (3)
14. अल्प काल, थोड़ा समय (2,2)
15. अवसर (2)
17. एयर इंडिया का लोगो, बड़ा सम्राट, शासक (2,2)
18. लक्ष्मी जी, बिजली, तडित (3)
20. भारत का राष्ट्रीय पक्षी (2)
21. टायर निर्माण का प्रमुख घटक (3)
24. समीर, वात, वायु (2)

उत्तर इसी अंक में

कवि रहीम कहते हैं...

कि आँसू नयनों से बहकर मन का दुःख प्रकट कर देते हैं। सत्य ही है कि जिसे घर से निकाला जाएगा, वह घर का भेद दूसरों से कह ही देगा।

**रहीमन आँसुवा नयन ढरि, जिय दुःख प्रगट करेइ,
जाहि निकारौ गेह ते, कस न भैढ़ कहि देइ।**



मेरा लंचबॉक्स

मेरा लंचबॉक्स है आला ।
चमचम करता रंग निराला ।

मम्मी झटपट सुबह पकाती
घर से भोजन इसमें लाता ।
विद्यालय में, इंटरवल में
मित्रों के संग मिलजुल खाता ॥
गर्मी हो अथवा सर्दी हो
नहीं स्वाद पर लगता ताला ॥...

यह लंचबॉक्स स्वतः तापित है
खाना रहता गर्म व ताजा ।
जब चाहूँ तब खा सकता हूँ
मैं बन जाता मन का राजा ॥
हो न देर तक खाना ठंडा
जब खाऊँ, कर दे मतवाला ॥...

लंचबॉक्स है मिला गिफ्ट में
पापा जी हैं लेकर आए ।
इसमें लगा हुआ है 'टाइमर'
सिस्टम को 'चार्जर' चलाए ॥
लंचबॉक्स का कवर अलग है
आसानी से धुलने वाला ।
मेरा लंचबॉक्स है आला ॥

गौरी शंकर वैश्य 'विनम्र'
लखनऊ (उत्तर प्रदेश)



अहा!

रसगुल्ला

है गुलगुला, मुलायम, मीठा
अहा! अहा! रसगुल्ला ।

चुपके-चुपके मुनिया रानी
रसगुल्ले को तकती ।
मुँह में पानी भर आया है
अब तो लार टपकती ॥

मुनिया चुप है, लेकिन चुनू
माँगे खुल्लमखुल्ला ॥...

मुँह में रखते ही रसगुल्ला
मीठी खुशियाँ भरता ।
ऐसा लगता मन में रस का
मीठा झरना झरता ॥

रस में सराबोर हो झूमें
कर लें हल्लागुल्ला ॥...

निरख रही हैं नानी कब से
रसगुल्लों का प्याला ।
मन करता तो खा लो नानी
इसका स्वाद निराला ॥

पान थूक कर आ जाओ अब
झटपट कर लो कुल्ला ॥...

डॉ. फहीम अहमद
सम्भल (उत्तर प्रदेश)

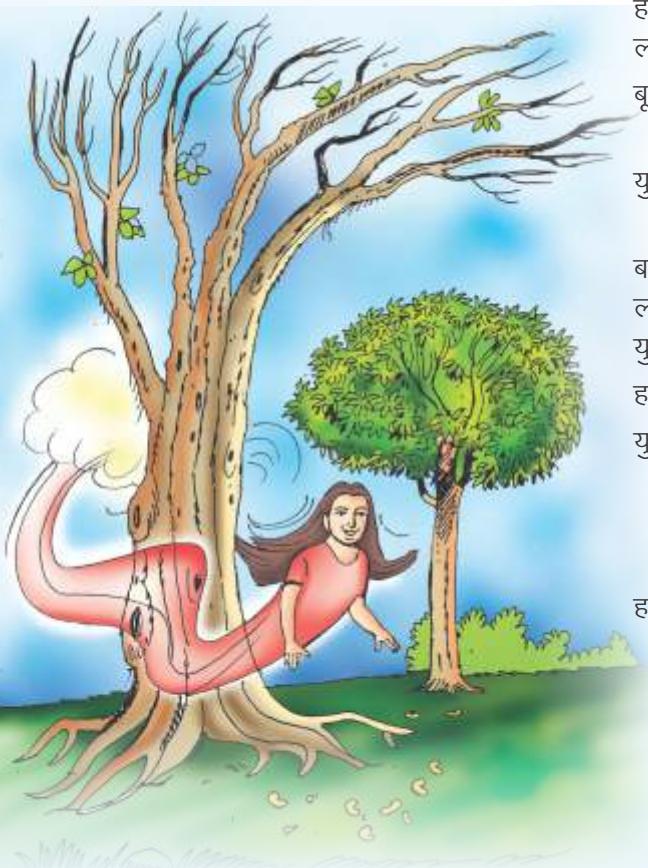
पेड़ की खुजो

पात्र— युवा पेड़, बूढ़ा पेड़, हवारानी, चार छोटे पेड़

विशेष— छोटे—बड़े पेड़, हवारानी इत्यादि पात्रों को प्रतीकात्मक रूप में ही दिखाना है। पेड़ों के हाथों में वसिर के पीछे पत्तियाँ व डालियाँ बाँधी जा सकती हैं तथा हवारानी के गले में बड़ा सफेद दुपट्टा पहनाया जा सकता है।

(बीच में दो पेड़ बनकर बच्चे खड़े हैं। एक पेड़ थोड़ा बड़ा है, दूसरा छोटा है।)

युवा पेड़ : (अपने हाथों को डालियों की तरह नचा—नचाकर हँस रहा है) हा...हा...हा... कहो बूढ़े मियाँ, इस बार भी तुम पर ज्यादा फल नहीं लगे। जितने लगे वे भी बेस्वाद हैं। तुम बूढ़े हो



बूढ़ा पेड़

गये हो। ...और मेरे फल देखो कितने मीठे—मीठे और स्वादिष्ट फल हैं। हा... हा... हा...।

: हाँ भई, मैं तो बूढ़ा हो गया हूँ इसलिए अब मुझ में अधिक पौष्टिक फल देने की ताकत नहीं बची है। तुम अभी युवा पेड़ हो इसलिए फलों से लदे हुए हो। (अपने हाथों को ठहनियों की भाँति हिलाते हुए) पर भाई, यहाँ आने वाले राहगीरों को आराम तो मेरी धनी ठहनियों की छाँव में ही मिलता है ना। तुम्हारी डालियाँ तो अभी छोटी हैं इसलिए छाँव नहीं दे पातीं।

: हा... हा... हा...। मुझे बहलाओ मत बूढ़े मियाँ। तुम्हें यह मानना पड़ेगा कि मैं तुमसे ज्यादा उपयोगी पेड़ हूँ। हा... हा... हा...।

युवा पेड़
(तभी अचानक तेज हवाएँ चलने लगती हैं। तेज हवाओं से दोनों पेड़ों की डालियाँ जोर—जोर से हिलने लगती हैं।)

बूढ़ा पेड़ : अरे, अचानक कितनी तेज हवाएँ चलने लगी हैं!

युवा पेड़ : हाँ, ये कौन आ रहा है?

(एक ओर से हवारानी बनी हुई एक बालिका आती है। वह अपने हाथों को हवा की तरह लहरा रही है। उसने हाथ में कुछ बीज ले रखे हैं। वह युवा पेड़ के पास आकर रुकती है।)

हवारानी

युवा पेड़

: नमस्ते भैया!

: क्या बात है हवारानी? मैंने तुमसे कितनी बार कहा है इतनी तेज उड़कर मत आया करो। मेरी सारी पत्तियाँ टूटकर गिरने लगती हैं।

: माफ करना पेड़ भैया। पर मैं क्या करूँ? मेरी चाल ही ऐसी है। अब देखो ना (हाथ खोलकर बीज दिखाती है) मैं अपने साथ ये नन्हे बीज भी उड़ाकर लाई हूँ। क्या तुम

	मेरी सहायता करोगे?	सभी पेड़ :
युवा पेड़	: कैसी सहायता? तुम्हें जो कहना है जल्दी कहो।	हिल-मिलकर रहना ही जीवन की रीत है, हिल-मिलकर रहने से बढ़ती सबमें प्रीत है।
हवारानी	: मैं यह चाहती हूँ भैया कि इन बीजों को तुम अपने पास शरण दे दो। इन्हें अपने पास की जमीन में बोने के लिए थोड़ी जगह दे दो।	हिल-मिलकर रहना ही सबसे मीठा गीत है, हिल-मिलकर रहने में ही सबकी जीत है।...
युवा पेड़	: नहीं, नहीं। यहाँ नहीं। मेरे पास फालतू जगह नहीं है। इन्हें तुम अपने साथ ही ले जाओ और कहीं मैदान में बो देना।	(युवा पेड़ यह सुनकर ठहाके लगा रहा है। तभी अचानक तेज हवाएँ चलने लगती हैं। सभी पेड़ जोर-जोर से हिलने लगते हैं।)
हवारानी	भैया! अगर मैं इन नन्हें बीजों को मैदान में बो दूँगी तो कोई पशु इन्हें उगते ही खा जाएगा या फिर तेज आँधी-तूफान में ये उखड़कर मर जाएँगे।	युवा पेड़ : ओह! लगता है तूफान आने वाला है।
युवा पेड़	: तो मैं क्या कर सकता हूँ? सबका ठेका क्या मैंने ले रखा है। मेरे पास रखूँगा तो ये मेरा खाद-पानी चूस जाएँगे। इसीलिए मैं इन्हें अपने पास नहीं रखूँगा।	(चारों छोटे पेड़ उत्तर चिल्लाने लगते हैं।)
हवारानी	: भैया, तुम बड़े मतलबी हो।	चारों छोटे पेड़ : बचाओ...! बचाओ...!
बूढ़ा पेड़	: (आवाज लगाते हुए) सुनो हवारानी! यहाँ आ जाओ, मेरे पास की जमीन में इन्हें बो दो। एक-दूसरे की सहायता करना हमारा फर्ज है। मैं इन नन्हें बीजों को अपने बच्चों की तरह पालूँगा।	बूढ़ा पेड़ : घबराना मत बच्चो! लगता है तेज तूफान आने वाला है। सब एक दूसरे को अच्छी तरह पकड़े रहना।
(हवारानी खुश होकर बीजों को बूढ़े पेड़ के आस-पास बो देती है।)		(चारों छोटे पेड़ एक-दूसरे को जोर से पकड़ लेते हैं। उन्होंने बूढ़े पेड़ को भी अपने डालीनुमा हाथों से पकड़ रखा है। युवा पेड़ अब हँसना छोड़ गिरते-गिरते बचने का प्रयास कर रहा है।)
हवारानी	: बहुत-बहुत धन्यवाद काका! अच्छा काका, मैं चलती हूँ।	(तभी जैसे आँधी का एक तेज झाँका आता है और युवा पेड़ स्वयं को बचा नहीं पाने के कारण चिल्लाता हुआ गिर जाता है। धीरे-धीरे तूफान थम जाता है। बूढ़ा पेड़ व चारों छोटे पेड़ धीरे-धीरे हिलना बन्द कर खड़े रह जाते हैं।)
(हाथ लहराते हुए दूसरी ओर चली जाती है।)		बूढ़ा पेड़ : उफ! कितना भयानक तूफान था। बच्चो, तुम सब ठीक तो हो ना?
		छोटे पेड़ : हाँ काका, हम बिलकुल ठीक हैं।
		बूढ़ा पेड़ : इस युवा पेड़ को अपने सामने मरता देखना कितना कष्टदायक है। मैंने इसे कितना समझाया था। काश, इसने भी अपने आस-पास अन्य पेड़-पौधों को बसने दिया होता तो आज वह भी मेरी तरह सुरक्षित होता। इसीलिए मैं कहता हूँ कि हिल-मिलकर रहने में ही सबकी जीत है। है ना?
		चारों छोटे पेड़ : हाँ काका। आप ठीक कहते हैं।
(बूढ़े पेड़ के आस-पास चार छोटे-छोटे पेड़ बने बच्चे आ खड़े हैं। सभी बूढ़े पेड़ के डालनुमा हाथ से अपने डालनुमा हाथ मिलाकर नाच-गा रहे हैं।)		

आज हम सब इसीलिए तो इस भयानक तूफान से बच गये।

(सब खिल—खिलाकर हँसने लगते हैं और फिर से डालनुमा हाथ से हाथ मिलाकर नाचने—गाने लगते हैं) सभी पेड़ :

हिलमिल कर रहना ही जीवन की रीत है,
हिल—मिल के रहने से बढ़ती सबमें प्रीत है।

गर्मी के ताप को मिलकर झेल जाते हैं,
सर्दी की ठंडक से भी बच हम पाते हैं,
बरसात—तूफान का भी हमको डर नहीं,
हिल—मिलकर रहने में ही सबकी जीत है।

**उमेश कुमार चौरसिया
अजमेर (राजस्थान)**

‘सुमित्रानन्दन पंत’ पृष्ठ 12 का शेष ...

महर्षि अरविन्द से प्रभावित होने के बाद उन पर अध्यात्म का प्रभाव पड़ा। इस तरह वे छायावाद, प्रगतिवाद और फिर अध्यात्मवाद से प्रभावित रहे।

गांधी जी के साथ 1930 में वह नमक आन्दोलन में शामिल हुए और देश सेवा के प्रति गम्भीर हुए। यहाँ उन्होंने ग्रामीण जीवन को बहुत करीब से देखा और उसने उनके मन को बहुत संवेदना से भर दिया। उनके साहित्य में किसानों के प्रति उनकी संवेदना स्पष्ट झलकती है।

उन्होंने अपनी कविताओं में प्रकृति का गुणगान ही नहीं किया है वरन् प्रकृति के माध्यम से मानव जीवन के सुखद भविष्य की भी कामना की है।

बच्चों, सुमित्रा नंदन पंत हमारे देश के अमर कवि थे जिनको याद करके हम आज भी श्रद्धा से झुक जाते हैं। उनका जीवन के प्रति दृष्टिकोण बहुत व्यापक था। मानव मन की पीड़ा को उन्होंने बहुत गहराई से समझा। उनके जीवन का सबसे बड़ा संदेश यही है कि उन्होंने अपने दुःख की कभी चिन्ता नहीं की। देश और समाज के हित में सोचने, लिखने और कार्य करने वाले इस महान कवि को हम सादर नमन करते हैं।

**सीमा जैन ‘भारत’
ब्वालियर (मध्य प्रदेश)**

दिमागी क्षमता



शब्द जाल

यहाँ बने शब्दजाल में 19 पुष्टों के नाम छुपे हैं। आप आगे, पीछे, दायें बायें, ऊपर—नीचे, आड़े तिरछे किन्तु लगातार समीप वाले खाने के अक्षरों को मिलाकर उनके नाम खोजें। एक अक्षर का उपयोग अधिक बार भी कर सकते हैं। सभी अक्षरों का उपयोग करें।

गु	ङ	गं	धा	स	च	म्पा
ल	ह	नी	गें	दा	मे	मो
दा	र	ज	सू	ब	ली	ग
ऊ	सिं	गा	र	हा	लि	रा
दी	जू	ने	ज	चां	द	त
ही	क	कु	मु	दि	नी	रा
ल	म	सु	खी	गु	ला	ब

उत्तर इसी अंक में

**प्रकाश तातेड़
उदयपुर (राजस्थान)**

अबूझ पहेली



राजा का राजदरबार लगा हुआ था। सभी दरबारी अपने—अपने आसन पर आसीन थे। उसी समय ब्राह्मण के वेश में एक यक्ष का आगमन हुआ और सबके सामने एक शानदार पहेली रखी— “पाँच मी, पाँच शी, पाँच मी न शी” फिर वह बोला— “एक सप्ताह के पश्चात मैं फिर आऊँगा तब तक अगर इस पहेली का उत्तर नहीं दिया तो मैं समझूँगा कि आपके दरबार में कोई पंडित है ही नहीं।” इतना कहकर वह ब्राह्मण वेश में यक्ष रवाना हो गया। एक बार के लिए पूरे दरबार में खामोशी छा गई।

राजा ने राजपंडित से कहा— “यदि तीन दिनों में इस पहेली का समाधान नहीं लेकर आए तो चौथे दिन आपके लिए मृत्युदंड तय है, क्योंकि यह पूरे राज्य के लिए प्रतिष्ठा का सवाल है। राज्य की प्रतिष्ठा धूमिल हो यह मुझे कभी स्वीकार नहीं है।”

यह सुनकर राज पंडित कुछ हताश और उदास होकर जंगल में बहुत दूर चला गया। एक विशाल पेड़ के नीचे बैठकर चिन्तन करने लगा ताकि कोई समाधान मिल जाए। पर संयोग की बात जिस वृक्ष के नीचे राजपंडित बैठा था। उसी पेड़ पर वह यक्ष अपने मित्र के साथ बात कर रहा था। यक्ष ने अपने मित्र से कहा— “अब शीघ्र ही हमें राजपंडित का कलेजा खाने को मिल जाएगा। मैंने राजदरबार में एक

अबूझ पहेली पूछी है। राजा ने राजपंडित को उसका उत्तर लाने के लिए कहा है और उत्तर नहीं देने पर राजपंडित का वध कर दिया जाएगा। तब उस राजपंडित का कलेजा हम खाकर तृप्त होंगे।”

यक्ष के मित्र ने पूछ लिया कि— “इस पहेली का उत्तर क्या है?” यक्ष ने बताया कि— “मेरी पहेली तिथियों पर आधारित है जिसमें पंचमी, सप्तमी, अष्टमी, नवमी और दसमी— ये पाँच तिथियाँ, जिसके अन्त में मी आती है और एकादशी, द्वादशी, त्रयोदशी, चतुर्दशी और पूर्णमासी— इन तिथियों के अन्त में शी आती है। एकम, दूज, तीज, चौथ और छठ— इन पाँच के अन्त में न मी आती है और न शी आती है। यही तो थी मेरी अबूझ पहेली— पाँच मी, पाँच सी, पाँच मी न शी।”

यह सारा वृतांत सुनकर राजपंडित प्रसन्न होकर अपने घर चला गया। समय आने पर राजसभा में पहुँचा और पहेली का सही अर्थ बताकर अपने प्राणों की रक्षा की। साथ ही राज्य की प्रतिष्ठा को धूमिल होने से बचा पाया। अपनी बुद्धिमता का परिचय देकर राजपंडित और अधिक सम्मानित होकर राजा का विशेष रूप—से विश्वास पात्र हो गया। अतः प्रत्येक समस्या का समाधान सुनिश्चित है, आवश्यकता है खोजने की।

मुनि श्री चैतन्यकुमार ‘अमन’

अभी हाल ही में हुई आई. आई. टी. प्रवेश परीक्षा में संकेत ने शहर में प्रथम रैंक प्राप्त की थी। उसे सम्मानित करने के लिए स्थानीय लायंस क्लब सोसायटी में बुलाया गया था। सम्मान के बाद अपने छोटे से भाषण में उसके अन्तिम वाक्य थे— “मित्रो, याद रखिए सफलता का कोई शॉर्टकट नहीं होता और कड़ी मेहनत का कोई विकल्प नहीं होता। उसमें नियमित खेल आपके दिमाग और शरीर को वापस कड़ी मेहनत करने के लिए नई ऊर्जा और स्फूर्ति से भर देता है।” इसी के साथ दर्शकों से भरा वह पांडाल तालियों की गड़गड़ाहट से गूँज उठा।

घर वापस आते वक्त गाड़ी में बैठे—बैठे संकेत के दिमाग में पिछले 4 साल की बातें याद आने लगी। जब संकेत नवीं कक्षा में था तो आई. आई. टियन बनना उसका सपना था पर पढ़ने के प्रति वह बिलकुल भी समर्पित नहीं था। हाँ, बाहर दोस्तों के साथ फुटबॉल

खेलना उसका पसन्दीदा काम था। जिसके लिए वह हर समय, हर स्थिति में तैयार रहता था। एक दीवानगी थी खेल के प्रति उसमें। घर वाले भी उसे इस बात के लिए नहीं टोकते थे। अचानक ही कोरोना आया और सभी जगह उसने अपने पैर पसार लिए। ऐसे में घर के अलावा और कोई सुरक्षित जगह न थी कोरोना से बचने के लिए।

विद्यालयों में ऑनलाइन पढ़ाई शुरू हुई और दिन भर मोबाइल पर रहने के कारण ऑनलाइन पढ़ाई करते—करते अब संकेत को ऑनलाइन गेम खेलने का शौक भी हो गया। वह हमेशा ही मोबाइल पर खेलता नजर आता। थोड़े दिनों में ही ऑनलाइन खेलने वालों की लिस्ट में वह भारत के नामी गेमर्स की गिनती में चलने लगा। इसी के चलते कई पुरस्कार भी उसने जीते। घर वाले भी खुश थे कि बच्चा घर में रहकर ही खेल रहा है और इनाम भी ला रहा है। इसके विपरीत संकेत की माँ को उसका दिन भर ऑनलाइन गेम खेलना बिलकुल भी पसन्द न आता था।

उनका मानना था कि आउटडोर गेम खेलने से न सिर्फ बच्चों का शारीरिक विकास होता है बल्कि मानसिक विकास के साथ—साथ उनमें कई सामाजिक भावनाओं व गुणों का विकास भी स्वतः ही हो जाता है,

पर कोरोना काल के चलते माँ संकेत को बाहर खेलने जाने भी नहीं दे सकती थी। वह कई बार संकेत को समझाती कि वह भाई संकल्प के साथ या घर के अन्य लोगों के साथ इंडोर गेम खेलें, महान व्यक्तियों की पुस्तकें पढ़ें, दादा—दादी से बातें करें और उनके अनुभवों से कुछ सीखें। पर संकेत के कान पर जूँतक न रेंगती।

साल गुजरा और धीरे—धीरे कोरोना चला गया। सब जगह की रैनक वापस लौट आई पर संकेत था कि ऑनलाइन गेम से बाहर ही नहीं निकल पा रहा था। उसका आई. आई. टियन बनने का सपना तो पता नहीं कहाँ दब गया था। दिन भर मोबाइल पर रहने से उसकी आँखें और कमज़ोर हो गया था। माँ ने संकेत को वापस बाहर जाकर खेलने के लिए समझाया पर किशोर होता



1

चपर-चपर चरती है चारा,
मैं-मैं कर मिमियाए।
दूध बहुत गुणकारी जिसका,
बोलो क्या कहलाए ?

**5**

कभी भी खुद को देख न पाती,
देखें सकल जहान।
इनके ही दम से हम करते,
चीजों को पहचान।

2

लता मैं लगने वाला पता,
शौक से खाया जाता।
कत्थे-चूने की परतों से,
रवूब सजाया जाता।

3

जीवन का पर्याय कहाँ,
तरल रूप मैं पाया जाँ।
ठोस रूप भी ले सकता हूँ
र्गम करो तो मैं उड़ जाँ।

4

हृदय है मेरा चाँदी सा,
शीशे का है तन।
तापमान तन का बतलाऊँ,
बूँदें नाम सुजन।

वसीम अहमद नगरामी लखनऊ (उत्तर प्रदेश)

उत्तर इसी अंक में

बालक कहाँ किसी की बात मानने वाला था । ऑनलाइन गेम खेलने से रोकने पर विद्रोह और उसके स्वभाव में आवेश आने लगा था । वह अपना शिष्टाचार भूलता जा रहा था ।

एक दिन 11वीं की परीक्षा से पहले उसकी शिक्षिका माँ ने अपने विद्यालय से आकर देखा तो पाया संकेत सुबह से गेम में लगा था और उसने शाम के 6 बजे तक कुछ नहीं खाया था । परीक्षा की उसकी कोई तैयारी न थी । माँ को बड़ा गुस्सा आया और उन्होंने संकेत से मोबाइल छीन लिया बोली— “बस, अब तुम्हें मोबाइल नहीं मिलेगा ।” संकेत ने सोचा थोड़ी देर में गुस्सा उत्तरने पर माँ मोबाइल दे देगी, क्योंकि ऐसा पहले भी दो—चार बार हो चुका था । पर इस बार माँ सख्त थी ।

उसने कई बातें, वादे करके माँ को मनाना चाहा पर माँ नहीं मानी । मोबाइल की लत पड़ जाने से संकेत बहुत विचलित हुआ, भाई से भी बेवजह लड़ा । माँ के सामने गिड़गिड़ाया पर माँ अपने निर्णय पर अदिग रही । 5 दिन बाद माँ संकेत को लेकर बैठीं और उसे उसका आई. आई. टियन बनने का सपना तथा उसका फुटबॉल का गेम याद दिलाया ।

माँ ने उसे समझाया— “देखो बेटा! तुम जो भी अपने भविष्य में बनना चाहो उसके लिए मेरी एक बात हमेशा याद रखना कि सफलता का कोई शॉर्टकट नहीं होता और कड़ी मेहनत का कोई विकल्प नहीं होता । उसमें नियमित खेल तुम्हारे दिमाग और शरीर में नई स्फूर्ति और ऊर्जा भर देता है । यदि तुम भविष्य में कुछ बनकर भी खेल को अपने जीवन की दिनचर्या में शामिल रखोगे तो न सिर्फ तुम्हारा काम ही उन्नति करेगा बल्कि तुम स्वयं भी हमेशा फिट रहोगे, जीवन में आने वाली सफलताओं व असफलताओं से घबराओगे नहीं बल्कि उन्हें सहजता से स्वीकार करोगे । सामाजिक गुणों का विकास भी तुम में स्वतः ही हो जाएगा ।” इसे माँ की बातों का जादू ही कहा जाएगा कि संकेत के दिमाग में ये बातें चली गई जिसकी माँ को भी आशा नहीं थी ।

अगले दिन एक नया ही संकेत घर वालों के सामने था । उसने कई किताबों की लिस्ट बनाकर पापा को लाने को दी । दिनभर अपने स्कूल की किताबों से पढ़ता रहा । कोरोना काल लगने के बाद उसने पहली बार अपने मित्र प्रत्यूष से भी फोन पर बात की जो 12वीं के बाद आई. आई. टी. की तैयारी

कर रहा था। शाम को 5 बजे संकेत ने माँ से कहा कि— “वह फुटबॉल खेलने जा रहा है, 2 घंटे में आ जाएगा।” यह क्या?.....घंटों फुटबॉल खेलने वाला संकेत ठीक 7 बजे घर में था। भोजन करके वह वापस पढ़ने बैठ गया। घर वालों को बड़ा आश्चर्य हुआ कि इसकी माँ और इसमें क्या बातें हुईं जो उसने आज एक बार भी ऑनलाइन गेम नहीं खेला। जो भी हो घर वाले इस नए संकेत को देखकर बहुत खुश थे। देखते—देखते 12वीं का साल बीत गया।

संकेत ने अपने पढ़ने और खेलने का यह नियमित क्रम एक दिन भी नहीं तोड़ा। हाँ उसके पढ़ने के घंटों में जरूर वृद्धि हुई। 12वीं के परीक्षा काल और उसके आई. आई. टी. प्रवेश परीक्षा के बीच माँ ने अपने विद्यालय से छुट्टियाँ ले ली थी। वे उसके खाने—पीने, सुबह जल्दी उठाने और हर छोटी—छोटी आवश्यकता का ध्यान रखती। स्वयं भी अपना कोई काम लेकर उसके साथ घंटों बैठी रहती।

आई. आई. टी. परीक्षा हुई और पहले प्रयास में ही रिजल्ट सबके सामने था। रिजल्ट वाले दिन जैसे ही पापा ने संकेत को रिजल्ट बताया, संकेत खुशी से झूमता माँ के पास गया और किशोरवय के माँ से लम्बे उस बालक ने माँ को आवेग में गोद में उठाकर धूमा डाला और चिल्लाया— “माँ आप जीत गयी।” माँ ने जब यह बात सुनी तो खुशी से छलछलाते नेत्रों से संकेत का सिर चूम कर बोली— “नहीं संकेत! तुम जीत गए, मैं तो सिर्फ तुम्हें रास्ता दिखाने वाली हूँ। अब भविष्य में कभी भी अपनी मेहनत को मत छोड़ना और न ही अपने आउटडोर गेम को।”

स्मृतियों की तरंगे फैलते—फैलते वर्तमान की ओर लौटने लगी थी, घर आ गया था। गाड़ी से उतरते ही एक बार फिर संकेत आगे चल रही माँ को गले से लगाकर बोला— “थैंक यू माँ, मुझ में इतना बड़ा परिवर्तन लाने के लिए।”

डॉ. ज्योति शर्मा
कोटा (राजस्थान)

चित्र पहेली

डोरियाँ सुलझाकर पता करो कौनसा खिलौना किसका है ?



चाँद मोहम्मद घोसी, मेड़ता सिटी (राजस्थान)

31 मई : तम्बाकू निषेध दिवस

बच्चों! क्या कभी आपने ध्यान दिया कि सिगरेट, गुटखा, पान मसाला के पैकेट और विज्ञापनों में एक वैधानिक चेतावनी लिखी होती है— “यह स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है।” आप बता सकते हैं ऐसा क्यों लिखा जाता है? आओ, आज इसी प्रश्न का उत्तर खोजते हैं।

आज पूरे विश्व में गुटखा—तम्बाकू खाने व सिगरेट—बीड़ी पीने की प्रवृत्ति ने महामारी का रूप ले लिया है जिसके परिणाम बहुत ही घातक हैं। तम्बाकू सेवन की लत को जन—स्वास्थ्य के बड़े शत्रु के रूप में देखा जाता है। प्रत्येक वर्ष की 31 मई को सम्पूर्ण विश्व में “तम्बाकू निषेध दिवस (NO TOBACCO DAY)” मनाया जाता है। जिसका उद्देश्य जन—मानस में यह सन्देश फैलाना है कि तम्बाकू उत्पाद स्वास्थ्य के लिए अत्यधिक हानिकारक है और इनसे दूर रहने में ही सबका हित है। आज विश्व की 23 प्रतिशत आबादी तम्बाकू जनित नशे की चपेट में है। तम्बाकू का सेवन करने वाले 50 प्रतिशत लोगों की इसके खतरनाक दुष्प्रभावों से मृत्यु हो जाती हैं, जिनकी संख्या लगभग 80 लाख प्रति वर्ष है।

विनाश का द्वार है,

तम्बाकू की कैद में सेहत

तम्बाकू का सेवन व्यक्ति को “शक्तिमान” नहीं बनाता बल्कि धीरे—धीरे उसकी रोग प्रतिरोधक क्षमता को ही कमजोर करता जाता है। तम्बाकू उत्पाद किसी भी रूप में लिए जाये यह अपना हानिकारक प्रभाव दिखाते ही हैं। मुँह में छाले, मसूड़े खराब होना, पेट में जलन, लम्बी खाँसी, सौंस की तकलीफ़, क्रोनिक ऑॅॅस्ट्रक्टिव पल्मोनरी डिजीज (COPD) आदि हो सकते हैं। तन्त्रिका तन्त्र पर प्रभाव से ‘स्ट्रोक’ की सम्भावना बढ़ जाती है जो कई बार जानलेवा साबित हो सकता है। याददाश्त, एकाग्रता में कमी और अल्जाईमर्स आदि रोग भी हो सकते हैं। इनके सेवन से मुँह, आहारनाल और फेफड़ों के कैंसर का ख़तरा बना रहता है। कीमोथेरेपी और रेडियोथेरेपी कारगर तो हैं लेकिन इनके भयावह दुष्परिणाम भी होते हैं। शल्य चिकित्सा द्वारा कैंसरग्रस्त अंग को ही काट दिया जाता है।

तम्बाकू उत्पाद शरीर के अन्य अंगों पर भी दुष्प्रभाव डालते हैं। यह हृदय रोग, उच्च रक्तचाप कोरोनरी आर्टरी संकुचन तथा हृदयाधात की सम्भावना को काफी हद तक बढ़ा देते हैं।

सिगरेट, बीड़ी का धुआँ न सिर्फ़ धूमप्राप्तन करने वाले के स्वास्थ्य को बल्कि आस—पास के व्यक्तियों को भी परोक्ष रूप (PASSIVE SMOKING) से नुकसान पहुँचाता है। यह नुकसान गर्भवती महिलाओं तथा बच्चों को कई गुना अधिक होता है। अतः ‘बचाव ही उपचार है’ यह ध्येय वाक्य हम सभी को याद रखना चाहिए।

तम्बाकू में लगभग 4 हजार रसायन होते हैं जिनमें 70 के करीब रसायन कैंसर के मुख्य कारण हैं। तम्बाकू का मुख्य अवयव निकोटिन



तम्बाकू का नथा

होता है जो मस्तिष्क की कोशिकाओं को उत्तेजित करने का कार्य करता है। यहीं वह तत्व है जो तम्बाकू की आदत के लिए जिम्मेदार होता है। अन्य रसायनों में हाइड्रोजन, साइनाईड, लेड, टार, बैंजीन, आर्सेनिक, कार्बनमोनोऑक्साइड, अमोनिया आदि मुख्य हैं। तम्बाकू को जलाने पर टार नामक विषैला पदार्थ उत्पन्न होता है जो धुएँ के साथ फेफड़ों में फैल जाता है। एक सिगरेट में लगभग 10–12 मिलीग्राम निकोटिन होता है।

जन चेतना के आयाम

तम्बाकू नियन्त्रण के लिए स्वास्थ्य शिक्षा पर मुख्य रूप से बल दिया जाना चाहिए। छात्रों तथा आमजन को खतरों से आगाह करने के लिए विद्यालयों, महाविद्यालयों एवं अन्य स्थानों पर गोष्ठियों, प्रदर्शनियों, स्लाइड शो, नुक़्ड़ नाटकों, रैलियों, पोस्टर एवं वाद–विवाद प्रतियोगिताओं, रेडियो वार्ताओं आदि का आयोजन किया जाना चाहिए। तम्बाकू निषेध की दिशा में कई गैर–सरकारी संगठन भी कार्यरत हैं। बालकों को विशेष रूप से शिक्षित करने की आवश्यकता होती है क्योंकि इसी उम्र में वे नशे की चपेट में आ सकते हैं। इसलिए बच्चों पर अधिकाधिक ध्यान देने की जरूरत है। परिवार में बच्चों की छोटी से छोटी समस्याओं पर ध्यान देकर उचित निराकरण करना चाहिए। उनकी भावनाओं का सम्मान, विचार प्रकटीकरण की स्वतन्त्रता देकर एवं स्वस्थ वार्तालाप द्वारा हम नशामुक्त भारत की कल्पना कर सकते हैं।

तम्बाकू सेवन कष्टों का उपचार नहीं है बल्कि यह तो कष्टों की शुरुआत भर है। एक दोहे से यह बात अच्छी तरह समझी जा सकती है।

“तम्बाकू ने कर दिया, जीवन को लाचार जिसको तुम समझा किये, कष्टों का उपचार।”

डॉ. गोपाल राजगोपाल
उदयपुर (राजस्थान)



विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) ने वर्ष 1988 में इस दिवस को हर वर्ष 31 मई को मनाने का प्रस्ताव पारित किया। इस संगठन द्वारा जारी नीतियों के अनुसरण में भारत सरकार ने वर्ष 2003 में धूम्रपान व तम्बाकू सेवन को नियंत्रित करने के लिए ‘सिगरेट व अन्य तम्बाकू उत्पाद अधिनियम’ (COTPA) लागू किया। इस अधिनियम का उद्देश्य तम्बाकू उत्पादों के उत्पादन, आपूर्ति, वितरण, व्यापार और विज्ञापन पर प्रतिबन्ध लगाना है ताकि इन उत्पादों के उपयोग पर प्रभावी नियन्त्रण किया जा सके।

विद्यालयों के आस–पास के 100 मीटर के दायरे में तम्बाकू बेचने पर पाबन्दी है। शिक्षकों से भी आशा की जाती है कि वे तम्बाकू उत्पादों का उपयोग नहीं करेंगे। छात्रों को तम्बाकू सेवन नहीं करने की शपथ दिलानी चाहिये। कोई भी व्यक्ति बच्चों को तम्बाकू उत्पाद खरीद कर लाने के लिए भी बाध्य नहीं कर सकता है। यदि ऐसा करता है तो यह दंडनीय अपराध है।

“कोटपा” अधिनियम के अनुसार सार्वजनिक स्थानों जैसे शिक्षण संस्थान, अस्पताल, रेलवे स्टेशन, सरकारी कार्यालय, न्यायालय, पुस्तकालय, प्रेक्षागृह, सिनेमागृह, मनोरंजन स्थल व आवागमन में प्रयुक्त वाहनों में धूम्रपान को वर्जित किया गया है। नियम की अवहेलना करने पर जुर्माना या कारावास या दोनों से दंडित किया जा सकता है। अपराध की गम्भीरता एवं बार–बार लिप्त पाए जाने पर जुर्माना और कारावास में वृद्धि भी की जा सकती है। तम्बाकू उत्पादों पर भी स्पष्ट सुपाठ्य शब्दों में इंग्लिश, हिंदी या स्थानीय भाषाओं में तथा चित्रों के माध्यम से चेतावनी लिखना आवश्यक किया गया है जिससे प्रयोग से पूर्व ही व्यक्ति उसके दुष्प्रभावों को समझ सके।



नई समृद्धि, नई मुख्यमंत्री आगे बढ़ता राजस्थान



राजस्थान दिवस हम सबके लिए महान गौरव का क्षण है। यह राजस्थान की वीरता, त्याग, विरासत और संस्कृति का उत्सव है।

राजस्थान दिवस पर मैं प्रदेशवासियों के सुख-समृद्धि और उत्तम स्वास्थ्य की कामना करता हूँ। हमारी सरकार हर कदम पर आपके साथ है।

अशोक गहलोत
मुख्यमंत्री

सभी प्रदेशवासियों को **राजस्थान** दिवस

30 मार्च, 2022
की हार्दिक शुभकामनाएं



राजस्थान की तरफ से

सूचना एवं जनसंपर्क विभाग, राजस्थान



दस सवाल दस जवाब

- 8
2
3
6
उत्तर इसी अंक में
10
1
5
4
7
9
- (1) इन चित्रों को पहचानिये।
 - (2) भारतीय सेना की स्थापना कब हुई?
 - (3) BSF का पूरा नाम बताओ।
 - (4) भारतीय सेना के वर्तमान सेनाध्यक्ष कौन है?
 - (5) भारतीय सेना की ट्रेनिंग कमान का मुख्यालय कहाँ है?

- (6) भारतीय सेना का सर्वोच्च वीरता पदक कौन सा है?
- (7) भारतीय सेना के तीन मुख्य प्रकार कौनसे हैं?
- (8) भारतीय सैन्य अकादमी कहाँ स्थित है?
- (9) राष्ट्रीय सेना दिवस कब मनाया जाता है?
- (10) भारतीय सेनाओं का सर्वोच्च कमांडर कौन होता है?

जरा हँस लो



- अध्यापक— मदन, तुम आज बहुत देर से विद्यालय पहुँचे!
मदन — सर, मैं तो समय पर ही घर से निकला और जल्दी—जल्दी चल रहा था लेकिन रास्ते में बोर्ड पर लिखा था— ‘धीरे चलिए’ इसलिए वहाँ से मैं धीरे—धीरे चल कर आया हूँ।”
- पति (अखबार पढ़ते हुए)— जानती हो, आजकल शहर में नगरपालिका ने आवारा जानवरों को पकड़ने का अभियान चलाया है।
पत्नी— तभी तो कहती हूँ बाहर जरा कम जाया करो।

विशेष - बाल पाठक भी चुटकले भेज सकते हैं।



प्रैकृक वचन

अगर आप काम करना चाहते हैं तो आपको खूब मेहनत करने की आवश्यकता है। कड़ी मेहनत का मतलब है, जब तक जाग रहे हो, काम करते रहो।



अधीर व्यक्ति खुश नहीं हो सकता। धैर्य रखना जरूरी है लेकिन साथ में जो हासिल करना चाहते हैं उसके लिए जिद होना भी जरूरी है।



सबसे महत्वपूर्ण चीज है कि महान लोगों का ध्यान आपकी और आकर्षित हो तो आप उनके साथ रहिये उनका ग्रुप ज्वाइन कीजिए।



अगर तुम सुबह उठो और तुम्हें ये लगे कि भविष्य अच्छा होने वाला है, तब ही ये अच्छा दिन है।

एलन मस्क



लो गर्मी फिर आई है,
आम खूब ही लाई है।

आम

ठेले वाला घूम रहा,
लोगे भैया पूछ रहा।

आम बहुत ही आला है,
इसका स्वाद निराला है।

चूसो चाहे काटो जी,
आओ आकर छाँटो जी।



खाते ही रह जाओगे,
महिमा इसकी गाओगे।

कल मैं फिर से आऊँगा,
ले लो हाँक लगाऊँगा।

रमेशचंद्र पंत

अल्मोड़ा (उत्तराखण्ड)

उत्तर इसी अंक में

दोनों चित्रों में आठ अन्तर ढूँढ़िए



"रुको-रुको, इतनी तेजी से कहाँ भागे जा रहे हो? क्या तुम्हारे पीछे कोई शेर पड़ा है तुम्हें खाने को? रैंबो भेड़िए ने पीलू हिरण से पूछा। "नहीं भाई, ऐसी बात नहीं है। असल में मेरे पड़ोसी कुछ खरगोशों ने कई दिनों से कुछ खाया नहीं है उनके लिए भोजन का इंतजाम करके आ रहा हूँ। जाकर जल्दी से उन्हें बता दूँ कि उनके लिए भोजन मिल गया है।" पीलू हिरण का जवाब सुनकर रैंबो भेड़िया जोर से हँसा।

"मूर्ख कहीं का, हर समय दूसरों के लिए ही सोचता रहता है। एक मुझे देख। अपने राम तो हमेशा खुद की सोचते हैं बाकी लोग जाए भाड़ में।" पीलू ने उसकी बातों पर ध्यान नहीं दिया और खरगोशों के पास जा पहुँचा। "सुनो भाइयों सुनो, तुम सभी मेरे साथ चलो। मैं अभी— अभी एक जगह पर उगी हुई लाल-लाल गाजर देखकर आ रहा हूँ। चलो वहाँ चलकर अपनी भूख मिटा लो।" पीलू ने पड़ोसियों को खुशखबरी दी तो उनके मुरझाए चेहरे खिल उठे।

"तुम कितने अच्छे हो पीलू। तुम्हें हमेशा दूसरों की फिक्र रहती है। हमने तो भोजन पाने की आस ही छोड़ दी थी।" गोरु खरगोश बोला। पीलू हिरण का स्वभाव ही कुछ ऐसा था। उसे हमेशा दूसरों की मदद करने में खुशी मिलती थी। खासतौर से बीमार और लाचार जानवरों की मदद करने के लिए वह हमेशा आगे रहता था। इसके विपरीत रैंबो भेड़िया एक नंबर का स्वार्थी और दुष्ट था। छोटे और कमज़ोर जानवरों को सताने में उसे बहुत मजा आता था।

झाड़ियों के पीछे जाकर अकसर वह छिप जाता और बाहर जाने वाले छोटे जानवरों को मौका पाते ही दबोच लेता। भोले जानवरों को बुद्ध बनाकर उनसे खाने पीने की चीजें भी छीन लेता और जोर से ठहाका लगाकर हँसता। एक दिन पीलू हिरण किसी काम से कहीं जा रहा था। रैंबो ने उसे जाते हुए देखा तो वह दोस्ती भूल कर उसी को दबोचने के लिए पीछा करने लगा।

"मुझे बड़ी जोर की भूख लगी है आज तो मैं तुम्हें ही खाकर अपनी भूख मिटाऊँगा।" पीलू का पीछा करते हुए वह जोर से चिल्लाया तो पीलू की सिंटी पिण्ठी गुम हो गई।" यह तुम क्या कह रहे हो रैंबो? हम दोनों तो दोस्त हैं क्या तुम अपने दोस्त को ही खा जाओगे?" "कैसा दोस्त और कैसी दोस्ती मूर्ख हिरण! आज तू मेरे हाथों से नहीं बच सकता।" रैंबो को लगातार पास आता देखकर पीलू समझ गया कि अगर जल्दी कोई उपाय नहीं सोचा गया तो उसकी जान जानी तय है।

दूसरों की मदद करने के लिए अकसर पीलू यहाँ—वहाँ जाता रहता था। जंगल के चप्पे—चप्पे से वह परिवित था। उससे एक उपाय सूझा। थोड़ी दूरी पर एक जगह गहरा दलदल था। पीलू उस तरफ दौड़ता हुआ गया और दलदल के भीतर तक चला गया। पीलू को दबोचने के चक्र में रैंबो भी उसका पीछा करता हुआ दलदल में चला गया। रैंबो दलदल में आया तो पीलू हँसने लगा। "तेरे सिर पर मौत खड़ी है और तू हँसने

अकल आई दलदल में



रहा है मूर्ख! दलदल में समा गया तो भी मारा जाएगा और बचा तो मैं तुझे जिंदा नहीं छोड़ूँगा। फिर क्यों हँस रहा है तू?" रेंबो ने आश्चर्य से पूछा।

"तेरे पापों का घड़ा भर चुका है दुष्ट। तूने अपना पूरा जीवन दूसरों को दुःख पहुँचाने में लगाया है। हर जानवर तुझ से परेशान है। तुझे यहाँ बचाने कोई नहीं आएगा जबकि मेरी मदद के लिए खबर मिलते ही सारा जंगल चला आएगा वह देखो।" इतना कहकर पीलू ने उसे पीछे देखने को कहा। वहाँ बहुत सारे जानवर अपने मददगार दोस्त पीलू को दलदल से निकालने के लिए तैयारी कर रहे थे। जबकि रेंबो की मदद के लिए कोई आगे आने को तैयार न था।

कुछ ही देर में सबने मिलकर एक रस्सी की सहायता से पीलू को दलदल से बाहर खींच लिया और उसकी जान बचा ली। यह देखकर रेंबो की आँखें खुल

गई। पहली बार उसे अन्दाजा हुआ कि दूसरों की मदद करने वालों का अंजाम हमेशा अच्छा ही होता है। अपनी बुरी हरकतों को याद करते हुए वह रोने लगा।

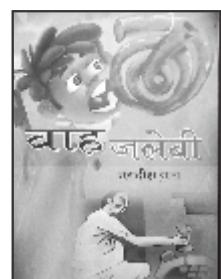
रेंबो को अपनी भूलों के लिए पश्चाताप करता हुआ देखकर पीलू को उस पर भी दया आ गई। उसने अपने दोस्तों से कहा कि वे रेंबो को दलदल से निकाल कर उसकी भी जान बचाएँ। यह देख शर्म के मारे रेंबो ने अपना सिर झुका लिया।

"जान बची तो लाखों पाए।" दलदल से बाहर आकर रेंबो की जान में जान आई। उसने पीलू समेत जंगल के सभी जानवरों से माफी माँगी और आगे से कभी किसी को तंग न करने का संकल्प लिया। उसमें आए इस बदलाव को देखकर सभी खुश थे।

**इंद्रजीत कौशिक
बीकानेर (राजस्थान)**

आओ पढ़ें : नई किताबें

22 बाल कविताओं की पुस्तक 'वाह जलेबी' का शीर्षक एवं आवरण दोनों ही आकर्षित करते हैं। स्व. जगदीश गुप्त की इन रोचक, विविध एवं शिक्षाप्रद रचनाओं का प्रकाशन डॉ. सुधा गुप्ता 'अमृता' द्वारा किया गया। पुस्तक में बच्चों के प्रिय विषय चिड़िया, गुब्बारा, घड़ी, मौसम, त्योहार आदि का समावेश है। अधिकतर कविताएँ भाव व शिल्प की दृष्टि से बेहतरीन हैं। बच्चों को कविताएँ पढ़ना, याद करना और अवसर आने पर सुनाने का चाव होता है अतः ऐसी पुस्तकें उन्हें बहुत मदद करती हैं।



पुस्तक का नाम : वाह जलेबी

मूल्य : 80 रुपए

प्रकाशक : नमन प्रकाशन, नई दिल्ली

लेखक : जगदीश गुप्त

पृष्ठ : 48

संस्करण : 2021



पुस्तक का नाम : सच्चा मित्र और अन्य कहानियाँ

मूल्य : 200 रुपए

प्रकाशक : आर.के.पब्लिकेशन, मुम्बई (महाराष्ट्र)

घर में छोटे बच्चों को कहानी सुनाने के लिए रची गई इस पुस्तक की 14 कहानियों की विषय वस्तु सामाजिक व दैनिक जीवन से जुड़ी है। इनका पारिवारिक परिवेश एवं शिक्षाप्रद होना, कहानी लेखन के उद्देश्य को सफल बनाता है। शीर्षक की कहानी 'सच्चा मित्र' में पुस्तकों को मित्र बनाने की सहज प्रस्तुति है। इन कहानियों में रोचकता व विविधता की प्रचुर मात्रा है। कहानियों के साथ चित्र देकर पुस्तक को आकर्षक बनाया गया है। कुछ कहानियाँ किशोर वर्ग के बालकों के लिए उपयोगी एवं पठनीय हैं।

लेखक : ताराचंद मकसाने

पृष्ठ : 108

संस्करण : 2021



भारत रत्न
भारतीय संविधान के जनक
डॉ. भीमराव अम्बेडकर
(14 अप्रैल 1891 – 6 दिसम्बर 1956)

Dr.B.R.Ambedkar

ये व्यक्ति के ही नहीं
इतिहास के हस्ताक्षर हैं।

महान बहुजन, विधिवेत्ता, अर्थशास्त्री, समाज सुधारक और
भारत के संविधान के रचयिता को

जन्म दिवस पर कोटि-कोटि नमन



“डॉ. भीमराव अम्बेडकर ने अपने जीवन काल में समानता के लिए संघर्ष किया और अपना पूरा जीवन देश के लिए आर्पित कर दिया। संविधान निर्माता के रूप में उनके योगदान के लिए देश सदैव ऋणी रहेगा। आधुनिक भारत की नींव तैयार करने में उनकी महती भूमिका रही। भारत रत्न बाबा साहूब डॉ. भीमराव अम्बेडकर को उनकी जयंती पर शत-शत नमन।”

अशोक गहलोत, मुख्यमंत्री

सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, राजस्थान

राजस्थान संचार



कहानी सर्कस की

संसार में सर्कस का इतिहास, अति प्राचीन है। सर्कस का जन्म ईसा पूर्व पहली शताब्दी में हुआ माना जाता है, जब लोग एक विशेष स्थान पर इकट्ठा होकर घोड़ों की दौड़ का आनन्द लेते थे। जूलियस सीजर्स के समय रोम में घुड़दौड़ के साथ रथदौड़ भी लोग देखने-दिखाने लगे थे।

सर्कस की दुनिया को नया मोड़ सन् 1768ई. में मिला, जब इंग्लैण्ड की सेना के सेनापति फिलिप एस्टली तथा उसके साथी च्यूली ने मिलकर घोड़ों की पीठ पर बैठकर करतब दिखाने शुरू किए। एस्टली, एक गोल घेरे के मैदान में घोड़ों की पीठ पर बैठकर तरह-तरह के करतब दिखाता था। यह खेल इंग्लैण्ड में इतना लोकप्रिय हुआ कि 1782 में एस्टली के एक अन्य साथी ह्यूज़' ने रायल सर्कस नाम से एक सर्कस कम्पनी ही बना डाली। तभी से इस अनोखे खेलों का नाम सर्कस पड़ा।

भारत तथा पड़ोसी देशों में सर्कस का जन्म कब हुआ ठीक से नहीं कहा जा सकता किन्तु यहाँ की 'नट' व 'करनट' जातियाँ घूम-घूम कर गाँवों में अनोखे खेल दिखाया करती थीं। वैसे भारत में सर्कस का जन्म 19वीं शताब्दी के आखिरी दशक में हुआ माना जाता है, जब एक विदेशी सर्कस कम्पनी भारत आई और उसने मुम्बई में एक स्थान पर सर्कस लगाया। इस कम्पनी के एक कलाकार विलियम शायनी को घोड़ों के करतब देखने के लिए मुम्बई क्या पूरे महाराष्ट्र की जनता उमड़ पड़ी थी। शायनी को अभिमान था कि उसके जैसे करतब भारत में कोई नहीं दिखा सकता है। उसके इस घमण्ड को

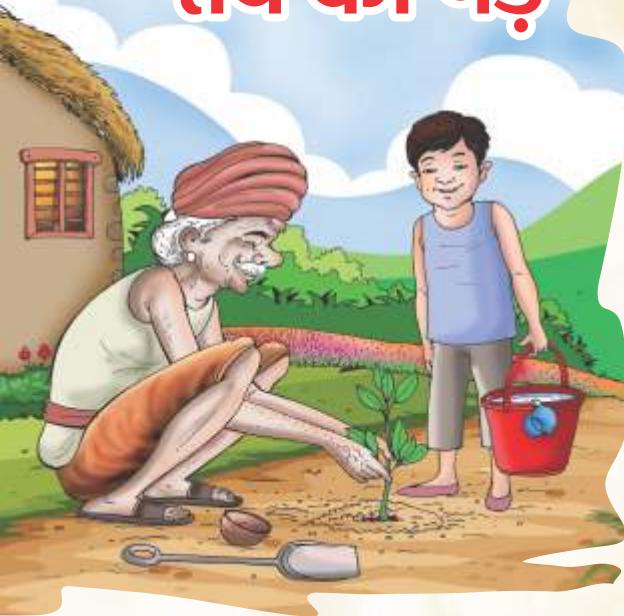
कुरंदाबाद (कोल्हापुर) के राजा की सेना के घोड़ों के सईस पंत विनायक छत्ते ने तोड़ा। छत्ते ने सर्कस के मैदान में शायनी का घोड़ा छीनकर ऐसे करतब दिखाए कि खुद शायनी ने दाँतों तले अँगुली दबा ली।

वह आग के जलते गोले से घोड़े समेत निकल जाता था। छत्ते ने प्रथम सर्कस कम्पनी 'छत्तेस न्यू इण्डियन सर्कस' स्थापित की। इसके बाद रायल, ताराबाई, कमला सर्कस कम्पनियाँ आईं। सर्कस को भारत में विकसित करने व लोकप्रिय करने का श्रेय केरल के तेल्लिचेरी गाँव के जिमनास्ट कन्निकण्ण को है। कन्निकण्ण ने अपने गाँवों के लड़के-लड़कियों को एकत्र कर उन्हें शारीरिक करतबों में ऐसा प्रशिक्षित किया कि देश-विदेश से उसके द्वारा प्रशिक्षित कलाकारों की माँग होने लगी। कन्निकण्ण के सहयोग से ही अमर सर्कस, भारत सर्कस तथा ओरियंट सर्कस कम्पनियों ने विदेशों तक में अपनी पताकाएँ फहराईं। एक समय भारत में करीब पाँच सौ छोटी बड़ी सर्कस कम्पनियाँ थीं जो हाट, बाजारों, मेलों, ठेलों, शहरों में करतब करती थीं। भीरबाट, कमला, अपोलो, भारत जंबो कम्पनियाँ आईं।

सर्कस एशिया, यूरोप, अमेरिका, इटली, चेकोस्लोवाकिया आदि देशों में बहुत लोकप्रिय खेल रहा है। जर्मनी के घुमक्कड सर्कस कलाकार पूरी दुनिया भर में मशहूर थे। सर्कस को आधुनिक रूप देने में अमेरिका का नाम प्रमुख है। अमेरिका में ही सबसे पहले जानवरों शेर, चीता, भालू, हाथी, कुत्तों, घोड़ों, तोतों आदि के अद्भुत करतब दिखाने शुरू

देखें पृष्ठ 37...

सेब का पेड़



दूस वर्षीय करण अपने माता-पिता के साथ दिल्ली में रहता था। उस दिन स्कूल में विज्ञान की अध्यापिका ने पेड़ों के महत्त्व के बारे में पढ़ाया और सभी को यह गृहकार्य दिया कि अपने घर के पास एक-एक पेड़ लगाएँ और उसकी देखभाल करें। करण सोच रहा था कि कौन सा पेड़ लगाए, तभी उसे अपने दादाजी की याद आई। वह हिमाचल प्रदेश में रहते थे। “दादा जी के गाँव में कितने सेब के पेड़ हैं। वहाँ की हवा भी कितनी साफ रहती है, क्यों न मैं सेब का पेड़ लगाऊँ? खूब सारे सेब लगेंगे तो खूब मजा आएगा। करण ने मन में सोचा।

उसने फलों की टोकरी से एक सेब निकालकर काटा और उसका एक बीज घर के बाहर बो दिया। उसने इस विषय में घर में किसी को नहीं बताया— “सरप्राइज” जो देना था। अब तो उसने सुबह शाम, स्कूल जाते समय, लौटते समय, थोड़ी-थोड़ी देर बाद जाकर देखना शुरू कर दिया। कभी वह उस जगह पानी दे आता तो कभी वहाँ की जंगली धास साफ कर आता, पर कई दिन बीतने पर

भी वहाँ कोई पौधा नहीं निकला। एक दिन करण ने देखा कि माली बगीचे के पौधों में खाद डाल रहा था। “काका, यह आप क्या डाल रहे हैं?” उसने पूछा। “बेटा यह खाद है, इसे डालने से पौधे अच्छी तरह व तेजी से बड़े होते हैं।” माली ने बताया। “काका मेरे लिए भी खाद लाकर दोगे?” करण ने कहा।

“पर तुम उसका क्या करोगे? अपने बगीचे में तो मैं लगा ही रहा हूँ।” “काका मुझे स्कूल से प्रोजेक्ट मिला है उसके लिए चाहिए।” सेब का बीज बोने की बात करण माली से भी छुपा गया क्योंकि वह पेड़ दिखा कर सबको चौंका देना चाहता था। अपनी पॉकेटमनी से खाद मँगाकर करण ने सारी उस जगह पर डाल दी जहाँ बीज बोया था। अब तो पौधा जरूर निकलेगा सोच कर वह चैन से सो गया। सुबह जब करण सोकर उठा तो बाहर भागा और यह देखकर बहुत ही खुश हुआ क्योंकि वहाँ एक काफी बड़ा पौधा निकल आया था। स्कूल जाते समय करण ने देखा कि पौधा पेड़ का रूप ले चुका है।

वह हैरान भी हुआ और खुश भी— “यह सब एक साथ सारी खाद डालने का असर हैं।” उसने मन ही मन सोचा। सारा दिन स्कूल में करण का मन नहीं लगा। छुट्टी हुई तो वह लगभग दौड़ता हुआ घर पहुँचा पेड़ देखने की जल्दी जो थी। पर घर पहुँच कर तो उसे अपनी आँखों पर विश्वास ही नहीं हुआ। वहाँ एक बहुत विशाल सेब का पेड़ खड़ा था जिसकी डालियाँ आसपास के घरों की खिड़कियाँ तोड़कर कमरों में घुस चुकी थीं। पेड़ पर तरबूज के नाप के सेब लगे थे। खाद का यह परिणाम निकलेगा उसने नहीं सोचा था। उसके घर में हंगामा मचा हुआ था। सभी पड़ोसी उसकी माँ के पास शिकायत लेकर आए हुए थे।

“यह कैसा पेड़ लगाया आपने, मेरी रसोई में घुसकर क्रोकरी तोड़ दी।” एक आंटी शिकायत कर रही थी। “हमारे केबल का तार आपके पेड़ की टहनियों में फंस गया है।” दूसरी आंटी कह रही थी। “हमारे घर की दीवार में तो क्रैक ही आ गया है।” यह तीसरी आंटी की शिकायत थी। “मेरी गाड़ी पर आपका सेब गिरने से डेंट पड़ गया है।” एक अंकल गुस्से में चिल्ला रहे थे। सभी करण की माँ को दोष दे रहे थे।

वह परेशान थी, कह रही थी— “हमने तो कोई पेड़ नहीं लगाया, पता नहीं रात भर में यह कहाँ से आ गया। हमारी तो खुद छत की मुंडेर टूट गई है।” करण सोच रहा था मैं तो सबको सरप्राइज देना चाहता था यह तो मुझे ही शॉक मिल गया। वह भागकर छत पर गया, वहाँ तरबूज जितने बड़े-बड़े सेब लगे थे। तभी कुछ दूर पर रहने वाला उसका दोस्त विपुल आया। “करण, यह सब क्या हो रहा है?” उसने पूछा। “देखो न, इस पेड़ ने कितना परेशान कर दिया है, मैंने तो टीचर के कहने पर इसे लगाया था, मुझे क्या पता था इससे इतनी परेशानी हो जाएगी!” “भाई, हमें तो कोई परेशानी नहीं है, एक तो हमारा घर थोड़ा दूर है तो कोई टूट-फूट नहीं हुई, दूसरे मेरी मम्मी ने तो कुछ सेब तोड़कर उनका जैम, मुरब्बा और पुडिंग बना लिए हैं।” विपुल ने बताया।

“अच्छा? चलो मैं भी एक सेब तोड़कर टेस्ट करके देखता हूँ।” कहकर करण ने सेब तोड़ने की कोशिश की पर उसकी ढंडी बहुत मजबूत थी। उसने मुंडेर में पैर फंसा कर जोर लगाया तो सेब के साथ—साथ खुद भी पीछे जा गिरा। तभी उसकी आँख खुल गई और उसने अपने आपको पलंग के नीचे गिरा पाया। “तो यह सब सपना था।” उसने बाहर जाकर देखा वहाँ कोई पेड़ नहीं था। वह उदास मन से लौटा तभी उसने देखा कि उसके दादाजी आए हैं। वह अपना सारा दुःख भूल गया और दादाजी से लिपट गया। दादा जी उसके लिए सेब की पेटी लाए थे। “दादाजी कैसे उगा लेते हैं आप इतने सेब? मैं तो एक पेड़ भी नहीं लगा पाया।” कहकर करण ने उन्हें सपने सहित पूरी बात बताई।

“बेटा कोई भी नया काम करने से पहले उसकी पूरी जानकारी हासिल कर लेनी चाहिए। सेब के पेड़ ठंडे मौसम में होते हैं, यहाँ का मौसम उसके लिए सही नहीं है। नीम, पीपल, बरगद, अमरुद, आम, अनार, गुलमोहर आदि बहुत से पेड़ हैं, जिन्हें तुम आसानी से यहाँ उगा सकते हो।”

“सेब का पेड़ वैसे भी अकेला नहीं लगाया जाता, उसके कई पौधे एक साथ लगाते हैं। एक स्वस्थ सेब के पेड़ को लगाने के लिए ग्राफिंग की

मदद भी ली जाती है।” दादा जी ने बताया। “यह ग्राफिंग क्या होती है दादाजी?” करण ने पूछा। “इसमें एक पेड़ के तने में पतला सा चीरा लगाकर दूसरे पेड़ की छोटी टहनी को उसमें फँसाकर बाँध दिया जाता है।” दादाजी ने बताया। “अरे बाप रे, यह तो बहुत ही मुश्किल काम है।” करण कुछ इस तरह बोला कि दादाजी को हँसी आ गई। “दादाजी, सेब की फसल कब होती है?” “वसंत ऋतु में उसमें सफेद—गुलाबी फूल आते हैं तथा जुलाई—अगस्त में फल।”

दादाजी बता ही रहे थे कि माँ नाश्ता ले आई। दादाजी ने करण से नमक मँगाया और पूरी चम्मच भरकर अपने नाश्ते की प्लेट में डालने लगे। “अरे दादाजी आप क्या कर रहे हैं? इतना नमक डालेंगे तो सब कड़वा हो जाएगा।” करण बोला। “सही कहा तुमने, मैं तुम्हें यही समझाना चाहता था, माना कि नमक खाने के स्वाद को बढ़ाता है पर यदि जरूरत से अधिक डाल दिया जाए तो खाने का सारा स्वाद खराब हो जाएगा। इसी तरह खाद व पानी की सही मात्रा ही पौधों को पनपने में मदद करते हैं, पर यदि ज्यादा डाल दिए जाएँ तो ये पौधों की जड़ को सड़ा देंगे। एक तो तुमने गलत मौसम में गलत तरीके से बीज बोया, ऊपर से अधिक पानी व खाद डाला, फिर बताओ यह पौधा कैसे निकलता?”

“समझ गया दादाजी, अब कोई भी नया काम करने से पहले मैं उसके बारे में पूरी जानकारी लूँगा। पर दादाजी, मेरे पेड़ का क्या होगा?” “तुम चिन्ता न करो, सेब खाओ, मैं अपने सामने तुम्हारा पेड़ लगवाऊँगा।” उसी शाम दादाजी करण के साथ जाकर नीम के पेड़ की पौध लाए और घर के बाहर उसे करण के हाथों से लगवा दिया। “यहाँ के मौसम में यह आसानी से चल जाएगा और आसपास की हवा को भी शुद्ध रखेगा।” उन्होंने बताया। धीरे—धीरे नीम का पौधा बड़ा होने लगा। यह सारी बात करण ने अपनी अध्यापिका को बताई तो उन्होंने उसे बहुत शाबाशी दी।

वदना गुप्ता
दिल्ली

'कहानी सर्कस की' पृष्ठ 34 का शेष...

किए। आंबर्ग, पाला कलाकार था जो शेर के मुँह में अपना सिर घुसा देता था। तब के सोवियत संघ में सर्कस ने नए—नए करतबों का विकास हुआ। जोकरों का प्रयोग, सर्कस में रूस की ही देन है। बौने, लम्बे, मोटे जोकर विदूषक अपने करतबों से खूब हँसाते थे।

लड़कियों का अंग तोड़ना तथा झूले का आश्चर्यजनक खेल, आज सभी सर्कसों में दिखाया जाता है। ये भी अमेरिका की देन है। जानवरों के खेल, करतब मौत का कुआँ, शेर से कुश्ती सहित अनेक अद्भुत खेल, आज सर्कस में दिखाए जाते हैं जिन्हें देखकर दर्शक दाँतों तले अँगुली दबा लेते हैं। एक समय आया था जब सिनेमा, भारत में बहुत लोकप्रिय हो गया था और लगा था कि शायद अब सर्कस का प्रचलन समाप्त हो जाएगा किन्तु ऐसा नहीं हुआ, क्योंकि सर्कस ने भी समय के अनुसार आधुनिकतम रूप ले लिया।

जहाँ सर्कस लगता है, वहाँ सर्कस गाँव स्थापित हो जाता है। सर्कस कंपनियाँ, अपना डेरा—तम्बू, सामान, हाथी, घोड़ों, शेरों के पिंजड़ों को लाने ले जाने के लिए अपने वाहन रखती हैं। कई



कम्पनियाँ तो रेल के डिब्बे भी प्रयोग में लाती हैं। पूर्व केन्द्रीय मंत्री मेनका गांधी ने सर्कस पर शिकंजा कसा क्योंकि सर्कस कंपनियाँ जानवरों को करतब सिखाने और दिखाने लिए बेरहमी से मारती पीटती थीं। सर्कस में जानवरों के प्रदर्शन पर रोक लगने से सर्कस के मालिकों और कलाकारों को झटका लगा है।

आज भारत में कस्बों, मेलों, शहरों में कहीं—कहीं छोटी सर्कस कंपनियाँ अपने करतब दिखाती हैं। मोबाइल गेम के कारण अब बच्चे सर्कस देखने कम आते हैं। प्रसिद्ध अभिनेता एवं निर्देशक राजकपूर द्वारा निर्मित मेरा नाम जोकर फ़िल्म पूरी तरह सर्कस पर आधारित थी।

**शिवचरण चौहान
कानपुर देहात (उत्तर प्रदेश)**

खुड़ोकू

यह अंकों का जापानी खेल है,
इससे बुद्धि का विकास होता है।

सुडोकू खेलना बहुत आसान है। खाली स्थानों को इस प्रकार भरें कि ऊपर से नीचे और बाएँ से दाएँ प्रत्येक पंक्ति एवं प्रत्येक नौ-नौ खानों के वर्ग में 1 से 9 तक अंक केवल एक बार आएँ।

			2		7		3	
5	4			6			8	
	1		9			5	2	
9	5			8	2			6
		6				7		
3			5	9			4	8
8	2				4		7	
	3			2			6	9
	6	5	1		9			

उत्तर इसी अंक में

क्रिकेट की

रोमांचक घटनाएँ



क्रिकेट के खेल में अनोखी घटनाएँ होती रहती हैं, इसीलिए इसे अनिश्चितताओं का खेल कहते हैं। इससे जुड़ी कुछ रोमांचक घटनाएँ बता रहे हैं।

कोई ढे दे एक चौका

डॉन ब्रैडमेन को क्रिकेट का महानतम बल्लेबाज माना जाता है। उन जैसा रन औसत क्रिकेट में किसी का नहीं है। उन्होंने 1928 में पहला टेस्ट खेला। उसमें वह असफल रहे। पर जब उनका सिक्का चला, तो शतक जमाना उनके बाएँ हाथ का खेल हो गया। 52 टेस्ट मैचों में उन्होंने 29 शतक (17 इकहरे, 10 दोहरे और दो तिहरे शतक) लगाए।

जब 1948 में इंग्लैंड के विरुद्ध ओवल में वह अपनी अन्तिम पारी खेलने उतरे, तो एक अनोखा रिकार्ड उनका इन्तजार कर रहा था। उस आखिरी पारी में चार रन बनाते ही उनका टेस्ट औसत 100 रन प्रति पारी का हो जाता। सब इस अनोखे रिकार्ड के इन्तजार में खड़े होकर ताली बजाने लगे। ब्रैडमेन को बॉलिंग करने के लिए तैयार थे एरिक होल्स। गेंदबाजी की दुनिया में उनका बड़ा प्रसिद्ध नाम था। पहली गेंद पर ब्रैडमेन ने कोई रन नहीं बनाया। अब दूसरी गेंद होल्स ने फेंकी और ब्रैडमेन का बल्ला चला। सबकी साँस रुक गई। हाथ ताली बजाना छोड़ जड़ हो गए। गेंद ने ब्रैडमेन को छकाते हुए विकेट को उड़ा दिया था।

ब्रैडमेन भारी कदमों से तालियों की गड़गड़ाहट के बीच पैवेलियन वापस लौटे। उनका टेस्ट औसत 99.94 पर अटक गया था।

जीत के लिए कुछ भी करेगा

1981 में आस्ट्रेलिया की टीम अजेय मानी जाती थी। पड़ोसी देश न्यूजीलैंड को वे अपने बराबर

नहीं मानते थे। उस समय भारत, न्यूजीलैंड और ऑस्ट्रेलिया के बीच त्रिकोणीय शृंखला खेली गई। भारत तो हार गया और फाइनल में न्यूजीलैंड की टीम सीना ताने आस्ट्रेलिया के सामने खड़ी थी। उस समय आस्ट्रेलिया के कप्तान महान क्रिकेटर ग्रेग चैपल थे, जो बाद में भारत के कोच भी बने।

फाइनल में बाजी आस्ट्रेलिया के हाथ से निकल रही थी। अन्तिम गेंद पर न्यूजीलैंड के मैकेंजी को मैच टाई कराने के लिए छक्के की जरूरत थी। ग्रेग चैपल परेशान थे कि कहीं अन्तिम गेंद पर छक्का न लग जाए। अन्तिम ओवर फेंक रहे थे उनके ही छोटे भाई ट्रेवर चैपल। पर जीत के जुनून में चैपल ने अनोखा फैसला लिया। उन्होंने अपने भाई को अंडर आर्म (बिना बाजू घुमाए) गेंद फेंकने को कहा ताकि बल्लेबाज छक्का न मार सके।

ऐसा ही हुआ और आस्ट्रेलिया ने मैच जीत लिया। चैपल के कदम की खूब आलोचना हुई पर गेंदबाजी के नियम अस्पष्ट होने के कारण चैपल को कोई गलत नहीं ठहरा पाया। आखिर इस मैच के बाद गेंदबाजी के विषय में नियम को स्पष्ट कर दिया गया कि अंडर आर्म गेंदबाजी नहीं की जा सकती।

अनिल जायसवाल

नई दिल्ली

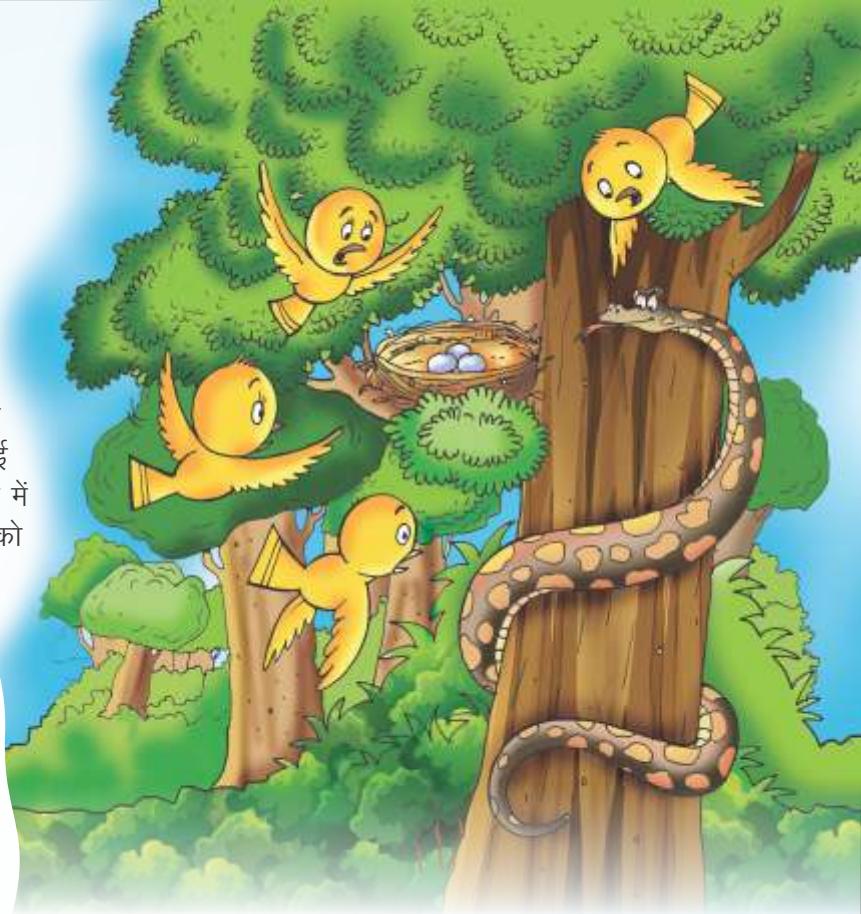


पंछी हुए फुर्द

काँटेदार पेड़ पर चिड़िया घोंसला बनाने में जुटी हुई थी। पेड़ में एक कोटर था। कोटर में साँप रहता था। वह चिड़िया को निगलने की ताक में था। एक चूहा वहाँ से गुजर रहा था। वह चिड़िया से बोला— “यहाँ नई आई हो। तुम्हें घोंसला बनाने के लिए कोई दूसरा पेड़ नहीं मिला?” चिड़िया ने नीचे झाँका। कहा— “सारा जंगल जल रहा है। मुझे आस—पास दूसरा पेड़ भी नहीं दिखाई दे रहा है।” चूहा और चिड़िया बात कर रहे थे। उन्हें नहीं पता था कि कोई साँप उनकी बातें भी सुन रहा है। वह पेड़ के कोटर में छिपा हुआ था।

चूहा धीरे से बोला— “वो सब तो ठीक है। लेकिन यहाँ एक साँप रहता है।” चिड़िया हँसते हुए कहने लगी— “तुम कब से डरने लगे? सब जानते हैं कि जीव ही जीव का भोजन है। जंगल में हर कोई किसी न किसी का भोजन है। वैसे वह साँप मूर्ख ही होगा, जो मुझे खाएगा।” चूहा चौंकते हुए बोला— “क्यों? कैसे?”

चिड़िया बोली— “अरे! मुझे खाने से अच्छा होगा कि वह मेरे तीन—चार अंडे खाए। क्या उसे इंतजार नहीं करना चाहिए?” बातचीत चल पड़ी। “अरे हाँ! यह तो मैंने सोचा ही नहीं।” “सोचना तो उस साँप को चाहिए। मैं तो कहूँगी कि उसे और बड़ा सोचना चाहिए।” “और बड़ा सोचना चाहिए! मतलब? मैं समझा नहीं।” “मतलब यह कि मेरे अंडे खाने वाला साँप मूर्ख। मेरे बच्चों को खाने वाला साँप बुद्धिमान।”



“तुम कैसी माँ हो? तुम्हारे बच्चों को खाने वाला साँप बुद्धिमान होगा!” “वो ऐसे कि यदि मैं बच्ची रहूँगी तभी तो अंडे दूँगी। तो जो मुझे खाएगा तो वो महामूर्ख हुआ। है न?” “हाँ। बिलकुल। और मूर्ख?” “वो, जो मेरे अंडे खा जाए। कैसे? वो ऐसे कि यदि साँप अंडे न खाए और अंडों से बच्चे होने का इन्तजार करे तो उसे ज्यादा बड़ा भोजन मिलेगा न?” “हाँ, बिलकुल और बुद्धिमान कैसे?” “बताया तो जो इन्तजार करे और अंडों से बच्चों को बड़ा होने दे। खुद सोचो एक लड्डू की जगह चार—चार लड्डू खाना चाहोगे या नहीं?”

“बात में तो दम है। तुम ठीक कहती हो। फिर भी अपना ख्याल रखना। सावधान रहना। मैं जा रहा हूँ। मैं उस साँप का निवाला नहीं बनना चाहता।” चिड़िया ने जवाब दिया— “तुम भी ध्यान से जाना। मुझे तो अभी इस पेड़ पर तीन—चार महीने रहना पड़ेगा। घोंसला बना रही हूँ। फिर अंडे दूँगी। पन्द्रह—बीस दिन बाद बच्चे निकलेंगे। फिर कई दिनों

बाद तो वे उड़ना सीखेंगे। तब जाकर हम कहीं ओर जा सकेंगे।” इतना कहकर चिड़िया भी घोंसले के लिए तिनका जमा करने लगी।

चिड़िया ने दिन-रात एक कर घोंसला बनाया और चार अंडे दिए। साँप ने मौका पाकर घोंसले के अंडे देख लिए थे। लेकिन चाहते हुए भी उसने अंडों को नहीं खाया। अंडों से नहें बच्चे बाहर निकल आए। चिड़िया बच्चों के लिए दाना लेने बहुत दूर तक जाती। इस बीच कोटर में रहने वाला साँप पेड़ पर चढ़ता और बच्चों को दूर से बड़ा होता हुआ देखता।

एक दिन की बात है। चिड़िया दाना लेने गई हुई थी। साँप घोंसले तक जा पहुँचा। वह चिड़िया के बच्चों से बोला—“कैसे हो बच्चों?” बच्चे सहम गए। एक बच्चा बोला—“कौन?” साँप बोला—“मैं चूहा हूँ। तुम्हारी मम्मी और मैं दोस्त हैं। मैंने ही कहा था कि यहाँ वह घोंसला बना ले। अच्छा अब यह बताओ कि उड़ना कब सिखोगे?” दूसरा बच्चा बोला—“पता नहीं। मम्मी कहती है कि अभी तो हमारे ढंग से पंख भी नहीं आए हैं। अभी हमारे बदन में ताकत भी नहीं है। अंकल हम कब बड़े होंगे?” साँप हँसते हुए कहने लगा—“अपनी मम्मी से पूछना। शायद अभी बहुत समय है। अच्छा मैं फिर आऊँगा।”

शाम को चिड़िया आई तो बच्चों ने बताया कि कोई मिलने आया था। एक बच्चे को याद रहा कि उसने खुद को चूहा बताया था। चिड़िया चुप रही। उसने धीरे से बच्चों के कान में कुछ कहा। बच्चे दाना खाकर सो गए। सुबह हुई। चिड़िया दाना लेने गई। साँप फिर आया। बच्चों से पूछने लगा तो एक बच्चे ने बताया—“अंकल, मम्मी कहती है कि अभी हम खूब बड़े होंगे। इस घोंसले से भी बड़े, तब हम उड़ना सीखेंगे। हम बड़े कब होंगे?”

साँप कहने लगा—“मैं भी तो उस दिन का इन्तजार कर रहा हूँ।” एक बच्चे ने पूछा—“आप क्यों इन्तजार कर रहे हो?” साँप ने हड्डबड़ाते हुए कहा—“अ...अ....फिर मैं अपना बिल आपको दिखाऊँगा। मेरा बिल थोड़ा दूर है न। जब तक तुम सब उड़ना नहीं सीख लोगे, कैसे जाओगे? वैसे क्या कह रही थी

तुम्हारी मम्मी?” तीसरा बच्चा बोला—“यही कि अभी तो बहुत समय है। शायद दो महीनों बाद ही मम्मी उड़ना सिखाएँ।” चौथा बच्चा बोला—“मम्मी कह रही थी कि वो हमें सामने हरे घास के मैदान में उड़ना सिखाएगी।” साँप चला गया। वह बुद्बुदाया—“जहाँ इतने दिन मैंने सब्र से काम लिया है, वहीं दो महीने और सही। अब तो कुछ दिन और भूख सहन करनी होगी। तब तक छोटा-मोटा शिकार करने के लिए जंगल की ओर निकलता हूँ।”

चिड़िया दाना लेकर लौटी तो बच्चों ने सारा किस्सा सुनाया। चिड़िया ने कहा—“ध्यान से सुनो। हम आज रात से उड़ना सीखेंगे, चुपचाप। किसी को कुछ नहीं बताएँगे। शोर भी नहीं करेंगे। कोई पूछे तो यही कहना है कि अभी उड़ना सीखने में दो महीने लगेंगे।” बच्चों ने यही किया। चिड़िया दिन में दाना लेने चली जाती। बच्चों को रात में उड़ना सिखाती। इस बीच साँप बच्चों से मिलने आता। बच्चे एक ही बात कहते—“मम्मी कहती है कि अभी उड़ना सीखने के लिए पंख ही नहीं आए हैं। पंख आने में समय लगेगा।” इस बार साँप ने कहा—“ठीक है अगली बार मैं तुम्हें अपना बिल जरूर दिखाऊँगा।” यह कहकर साँप चला गया।

फिर एक दिन चिड़िया बच्चों से बोली—“अब तुम उड़ना सीख चुके हो। एक बात ध्यान रखो। धैर्य का साथ कभी नहीं छोड़ना। कैसी भी परेशानी आए, घबराना नहीं। अब तुम्हें अपना रास्ता खुद चुनना है। साँप फिर तुमसे चूहा बनकर मिलने आए, उससे पहले फुर्र हो जाओ।” यह सुनकर बच्चे डर गए। चिड़िया ने आगे कहा—“उस साँप को मैंने पहले ही दिन पेड़ की कोटर में देख लिया था। यदि मैं खुद ही डर जाती तो घोंसला ही नहीं बना पाती। यदि मैं तुम्हें पहले ही बता देती कि तुमसे मिलने चूहा नहीं, साँप आया है, तो तुम डर जाते। तुम्हारा उड़ना सीखने का हौसला भी टूट सकता था।” चारों बच्चों ने माँ को अलविदा कहा। पलक झपकते ही वे अलग-अलग दिशाओं की ओर उड़ चले।

**मनोहर चमोली ‘मनु’
पोंडी गढ़वाल (उत्तराखण्ड)**



पढ़ो और जानो

इन प्रश्नों के उत्तर इसी अंक में हैं,
आपको उन्हें हूँढ़ना है।

- दादाजी की धरोहर क्या थी ?
- संकेत के जीवन में बदलाव कौन लाया ?
- लयबद्ध श्वास किसे कहते हैं ?
- हमारे दैनिक जीवन में मजदूरों का क्या महत्व है ?
- सुमित्रा नन्दन पंत किस उम्र में कविता लिखने लगे ?
- तम्बाकू में मुख्य हानिकारक पदार्थ कौनसा है ?
- सबसे पहले कौनसी सर्कस कम्पनी बनी ?
- करण ने घर के बाहर कौनसा पेड़ लगाया ?
- ‘पंछी हुए फुर्र’ कहानी से क्या शिक्षा मिलती है ?
- 14 अप्रैल 22 को प्रधानमंत्री ने किसका उद्घाटन किया?

उत्तरमाला

दस सवाल : दस जवाब

- (1) (अ) भारतीय सेना का लोगो (ब) TANK (स) MISSILE (द) LOGO CRPF (2) 1895 (3) बॉर्डर सिक्योरिटी फॉर्स (सीमा सुरक्षा बल) (4) जनरल मनोज मुकुन्द नरवणे-30 अप्रैल 2022 तक (5) शिमला (6) परमवीर चक्र (7) थलसेना, नौसेना, वायुसेना (8) देहरादून (9) 15 जनवरी (10) भारत का राष्ट्रपति

अन्तर छाँदीर

- (1) हवाई जहाज का आकार छोटा (2) तितली का रंग अलग (3) कछुए का आकार छोटा (4) पतंग अतिरिक्त (5) लड़की की एक चोटी गायब (6) बादल का रंग अलग (7) लड़के का एक हाथ गायब (8) फुटबॉल अतिरिक्त

दिमागी कसरत

गुडहल, गुलदाऊदी, हरसिंगार, रजनीगंधा, गेंदा, सदाबहार, चम्पा, लिली, चमेली, मोगरा, रातरानी, सूरजमुखी, चाँदनी, जूही, कमल, कुमुदिनी, कुसुम, गुलाब, कनेर।

मनोरंजक चित्र पहेली

कुल 6 खरगोश
चित्रित हैं।

स्पर्श सेठ
कक्षा 9, सूरत

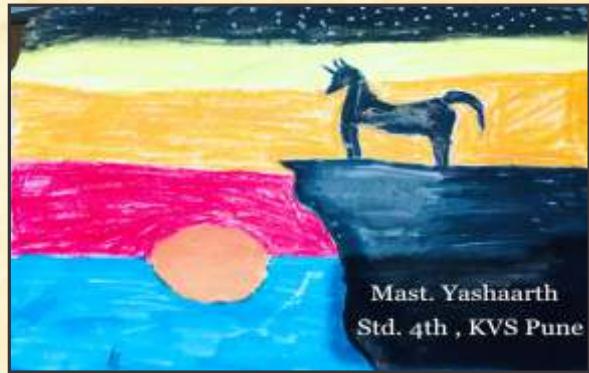


वर्ग पहेली

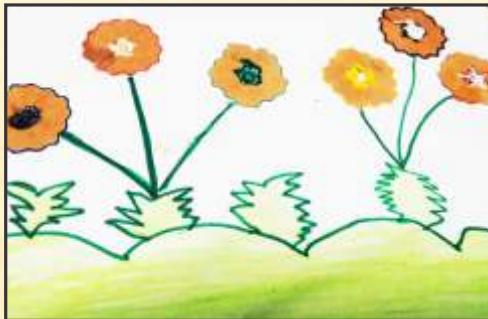
1 मो	2 ह		3 न	4 दा	दा		5 ता	6 ज
7 र		ज		8 मो	द	क		वा
पं			9 व	द	न		10 आ	न
11 ख		त		र		12 साँ	फ	
	13 ल		14 क्ष		15 मौ		16 त	17 म
18 च			19 ण	20 मो	ग	21 र		हा
22 प	ल	भ	र			23 ब	24 ह	रा
ला			र	25 द	र	वा		जा

सुडोकू

6	9	8	2	5	7	1	3	4
5	4	2	3	6	1	9	8	7
7	1	3	9	4	8	6	5	2
9	5	4	7	8	2	3	1	6
2	8	6	4	1	3	7	9	5
3	7	1	5	9	6	2	4	8
8	2	9	6	3	4	5	7	1
1	3	7	8	2	5	4	6	9
4	6	5	1	7	9	8	2	3



आराध्य पुरोहित, कक्षा 2, गुलाबपुरा



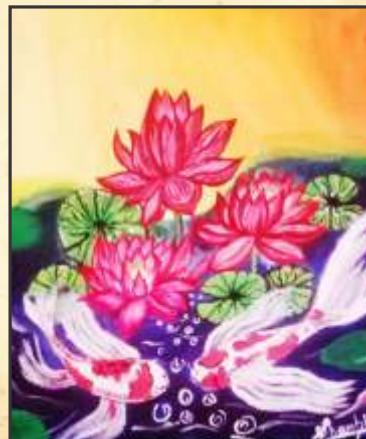
यशार्थ, कक्षा 4, पुणे

तेरे आँचल का एहसास,
किसी भी गम को ना आने दे मेरे पास।
तेरा होले से मुस्कुरा देना,
मेरी हर परेशानी को भुला देता
कभी तेरा सखी बन खेल खिलाना,
कभी तेरा गुरु बन पाठ पढ़ाना,
कभी लजीज खाना बनाना,
तो कभी नृत्य सिखाना,
हम बच्चों के साथ बच्ची बन जाती है,
एक माँ है जो कितने रूप निभाती है,
नाम, पैसा, शोहरत सब यहीं रह जाना है,
हमारी माँ कहती दूसरों को खुशी दो,
जीवन में सच्ची खुशी व सुकून पाना है तो
ईश्वर से बस यही मन्नत, फिर यही जहाँ मिले,
फिर यही गोद मिले, फिर यही माँ मिले।

महक गुप्ता, कक्षा- 10 , बीकानेर (राजस्थान)



तनिशा अब्बानी, कक्षा 1, यूट
महक प्रज्ञा बोथरा, कक्षा 8, दिल्ली



शमाखारी सिन्हा, कक्षा 8, आगरा

आप भी अपनी कलम और कूँची का कमाल हमें मोबाइल नं. 9351552651 पर या पत्रिका के पते पर भेजें।



'नव वर्ष, नव तरंग, नवरंग से महका हर आँगन'

नव वर्ष पर सखियों की बाड़ी की बालिकाओं की मोहक चित्रकला !



रेनक गुर्जर



मोनिका रावत



तेजस्वी



दीपा



मोनिका



तमन्ना शर्मा



खुशी



आदर्शनी

: सामग्री सौजन्य :
आई.आई.एफ.एल.
फाउंडेशन द्वारा
गाँवों में संचालित
सखियों की बाड़ी केन्द्र
श्रीनगर, अजमेर



नहा

अखबार

देश व दुनिया की खबरें
जो आप जानना चाहेंगे



कहानी सुनाओ और 10 रुपए पाओ

वर्तमान संकट के दौर में लोगों के संघर्ष और दुःखों को बाँटने के लिए पुणे निवासी इंजीनियरिंग के छात्र राज डगवार आम लोगों तक पहुँच कर उनके जीवन की कहानी सुनने का प्रयास करते हैं और इसके बदले में उन्हें 10 रुपए भी देते हैं। डगवार हर रोज अजनबी लोगों की कहानियाँ सुनकर उनके मन के बोझ को थोड़ा हल्का करने के लिए कम से कम पाँच घंटे फुटपाथ पर बिताते हैं। लगभग 100 के करीब लोगों ने अपनी कहानियाँ राज के साथ साझा की हैं और उन्हें सुनना एक आश्चर्यजनक अनुभव था।



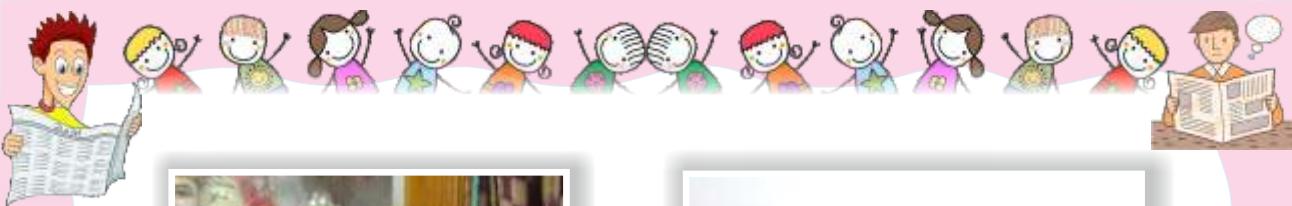
योग कार्यक्रम में 114 राष्ट्रों की भागीदारी

भारतीय खेल केंद्र द्वारा आयोजित एक योग कार्यक्रम में 114 राष्ट्रों की भागीदारी दर्ज की गई। जिससे एक नया विश्व रिकॉर्ड बना। इस प्रकार भारतीय समुदाय और कतर सरकार द्वारा योग का अभ्यास करने के लिए कई देशों के लोगों को एक साथ लाने का यह एक महान प्रयास हुआ।



गुजरात में बनी भारत की पहली स्टील रोड

गुजरात के सूरत शहर में हजीरा औद्योगिक क्षेत्र में एक किलोमीटर लम्बी स्टील की रोड बनाई गई है। 6 लेन की इस सड़क को बनाने में स्टील प्लांटों का 1 करोड़ 90 लाख टन कचरे का यूज किया गया है। स्टील वेस्ट से बनी इस सड़क पर अब हर दिन करीब 1000 से ज्यादा ट्रक 18 से 30 टन का वजन लेकर गुजरते हैं, लेकिन सड़क खराब नहीं हुई है। हमारे देश में हर साल अलग-अलग स्टील प्लांट से कई लाख टन कचरा निकलता है। जिसका उपयोग कर स्थायी मजबूत सड़क बनाने के काम को गति दी जा सकती है।



126 साल के शिवानंद को पद्मश्री अवार्ड से नवाजा

वाराणसी के कबीरनगर इलाके के बाबा शिवानंद एक ऐसे शख्स हैं जिनकी उम्र 126 साल की है। जिनको भारत सरकार द्वारा पद्मश्री अवार्ड से नवाजा गया है। बाबा शिवानंद के 126 साल की उम्र में भी स्वस्थ रहने का कारण नियमित योग है। इनका जन्म पश्चिम बंगाल में हुआ था। दुनिया में सबसे अधिक उम्र के होने का दावा करने वाले स्वामी शिवानंद कहते हैं कि उनकी लम्ही उम्र का राज उनकी स्वस्थ जीवन शैली है। वे अपनी लम्ही उम्र के लिए नियमित योगाभ्यास करते हैं साथ ही उनका आहार भी बहुत ही सात्त्विक होता है।



प्रधानमन्त्री संग्रहालय का उद्घाटन

प्रधानमन्त्री नरेन्द्र मोदी ने 14 अप्रैल को दिल्ली के तीन मूर्ति भवन में प्रधानमन्त्री संग्रहालय का उद्घाटन किया। अपने सम्बोधन के दौरान पी.एम. मोदी ने कहा कि संग्रहालय में जितना अतीत है, उतना ही भविष्य भी है। हम भारतवासियों के लिए बहुत गौरव की बात है कि हमारे ज्यादातर प्रधानमन्त्री बहुत ही साधारण परिवार से हैं। प्रधानमन्त्री संग्रहालय में अब तक के सभी प्रधानमंत्रियों के कार्यों का प्रदर्शन होगा। पहले इसे नेहरू संग्रहालय भवन के नाम से जाना जाता था। संग्रहालय में महत्वपूर्ण पत्राचार, कुछ व्यक्तिगत वस्तुओं, उपहार और यादगार वस्तुएँ, सम्मान, पदक, स्मारक टिकट, सिक्के आदि भी प्रदर्शित किए गए हैं।



83 साल की उम्र में साइकिल की सवारी

मुम्बई की 83 साल की ऊषा सोमण समुद्रीय तट साइकिल चलाती है। ये अभिनेता मिलिंद सोमण की माँ हैं। सोमण ने बताया कि करीब 25 साल बाद माँ साइकिलिंग कर रही हैं। आपको जो चीजें पसन्द हैं, उन्हें करते रहें और नियमित रूप से उसका अभ्यास करें।

मेरे घर को भी घर बोलो

आला—बाला, लल—लल—लाला
 कान पकें सुन—सुनकर जाला
 मुँह से अपने थूक छोड़कर
 मकड़ी कहती पैर जोड़कर
 मेरे कानों में रस घोलो
 मेरे घर को भी घर बोलो ।

अत्ता—बत्ता, लत—पत—लत्ता
 कान पकें, सुन—सुनकर छत्ता
 भिन—भिन—भिन भिन्नाया करती
 मधुमक्खी यह गाया करती
 मेरे कानों में रस घोलो
 मेरे घर को भी घर बोलो ।

इल—पिल—गिल—पिल चिल्लम चिल—पिल

कान पक गए सुन—सुनकर बिल
 चूँ—चाँ—चूँ—चाँ चूहा करता
 कहते—कहते आँसू भरता
 मेरे कानों में रस घोलो
 मेरे घर को भी घर बोलो ।

अरबा—गरबा—झरब—झरबा
 कान पकें सुन—सुनकर दरबा
 बार—बार डैनों को खोले
 कुड़—कुड़—कुड़—कुड़ मुर्गी बोले
 मेरे कानों में रस घोलो
 मेरे घर को भी घर बोलो ।

शादाब आलम
लखनऊ (उत्तर प्रदेश)

मौसम गरमी का

गरम तवे सी तपती धरती, मौसम गरमी का,
 लू की लपटें, आँधी—अंधड़, मौसम गरमी का ।

घर से बाहर निकल न पाएँ, सब दुबके बैठे,
 आने—जाने पर पाबंदी, मौसम गरमी का ।

टप—टप चुए पसीना तन से, है मुश्किल जीना,
 कैसा आया गरम महीना, मौसम गरमी का ।

सुबह—सुबह ही सूरज दादा आएँ रोब जमाते,
 तिल सी रातें, ताड़ हुए दिन, मौसम गरमी का ।

शरबत, आइसक्रीम, जलजीरा, ठंडाई, लरस्सी,
 ए.सी., कूलर, पंखे साथी, मौसम गरमी का ।

घास ढूँढ़ती गोरी गैया, सोन चिरैया प्यासी,
 पानी—पानी सबकी बानी, मौसम गरमी का ।

डॉ. श्रीखंडलाल गर्व
शीलवाड़ा (राजस्थान)



I like the most...



Rani Lakshmi Bai was a great freedom fighter. She was one of the leading figures of the Indian Rebellion of 1857. She was born on 19th November in Varanasi to Brahmin parents. Her father's name was Moropant Tambe and her Mother's name was Bhagirathi Sapre. Her childhood name was Manikarnika famously known as Manu Bai.

As a child, she received her training as a soldier and learnt horse riding and wrestling. She got married to Gangadhar Rao, the king of Jhansi, at a very young age. After her marriage, she was named Rani Lakshmi Bai. Unfortunately, her husband died after two years of their marriage. After her husband's death, she started ruling over the Jhansi. She fought the first war of Independence against the British in the year 1857.

Rani Lakshmi Bai proved her courage and fought bravely. She gave a tough fight to the British. Her determination and courage is an inspiration for me.

Archita Tater, Class 6, Howrah, Kolkata

(We received these views from the BKD Creativity Club members on the given topic "I like the most".)

How I did it ?

If someone ask me what do I do I will be having only one answer for them that I am portrait artist but practically I am a small kid studying in 6th standard. I started going to my first drawing class when my mother took me to the class at that time when I was 5 years old. After 3 to 4 months I left the class because I wanted to explore the art on my own so that I would be having my own experience. As time gone I got attracted to portrait making day by day. Due to school reason I did not have time to practice daily. Then in the lockdown period in the year 2020 I had much time to practice daily and I practiced 4-5 hours per day.



I realised that the most important thing in this is practice. Some precautions for making an art perfectly are 1: to keep patience 2: daily practice 3: do not use oily or wet hands while doing any process and 4: in the beginning use easy methods for outline, shading etc. Day by day go to the tough methods for outline, shading and blending. In beginning do not go to highlights and details for at least your first year. I would like to thank Bachchon ka Desh for giving me this great opportunity.

Tanishq Bararia, Class 6th, Bangalore, Karnataka

जन्मदिन की बधाई

1 मई
पूजा सोनी
मेडता सिटी

14 मई
दिव्यांशी शिंदे
मेडता सिटी

22 मई
प्रियंश मेधावाल
निम्बाहेडा

Hello, Kangaroo

Hello, what is your name?

You want to know who am I? My name is Kangaroo. I am from Australia.

What is in your belly?

This is a pouch. Right from the time of birth, we have this bag on our belly.

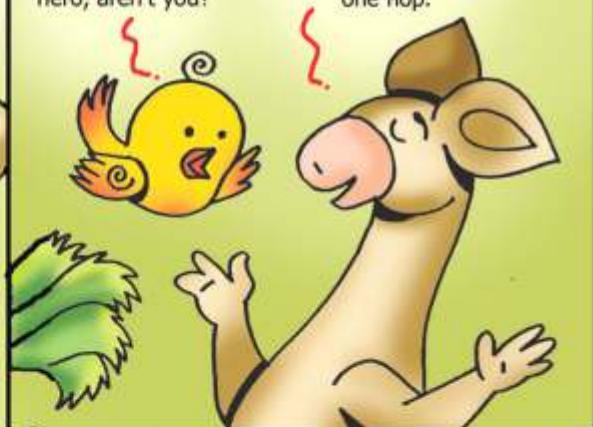


Your head is so small... But ears are very long...

You are right. Another special feature is that we also have a fat tail and strong legs.

You are a jumping hero, aren't you?

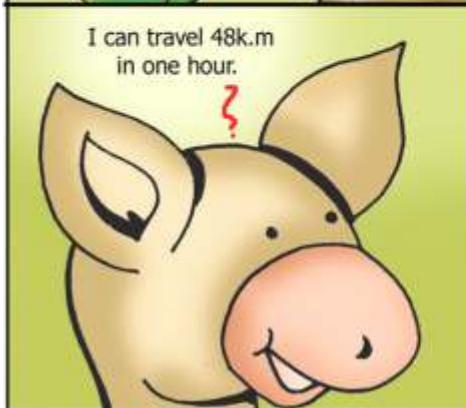
Yes, I can cover a distance of 9 metres in one hop.

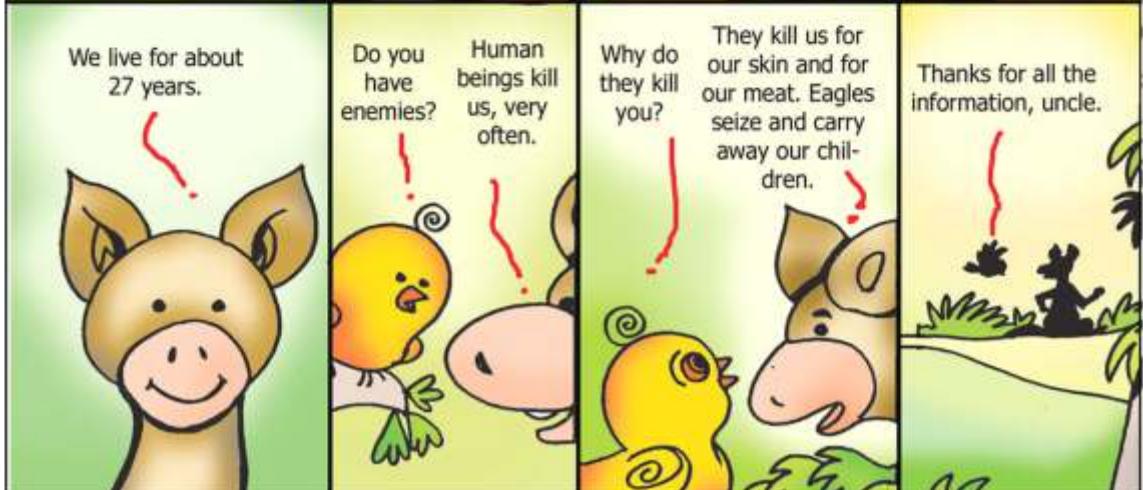
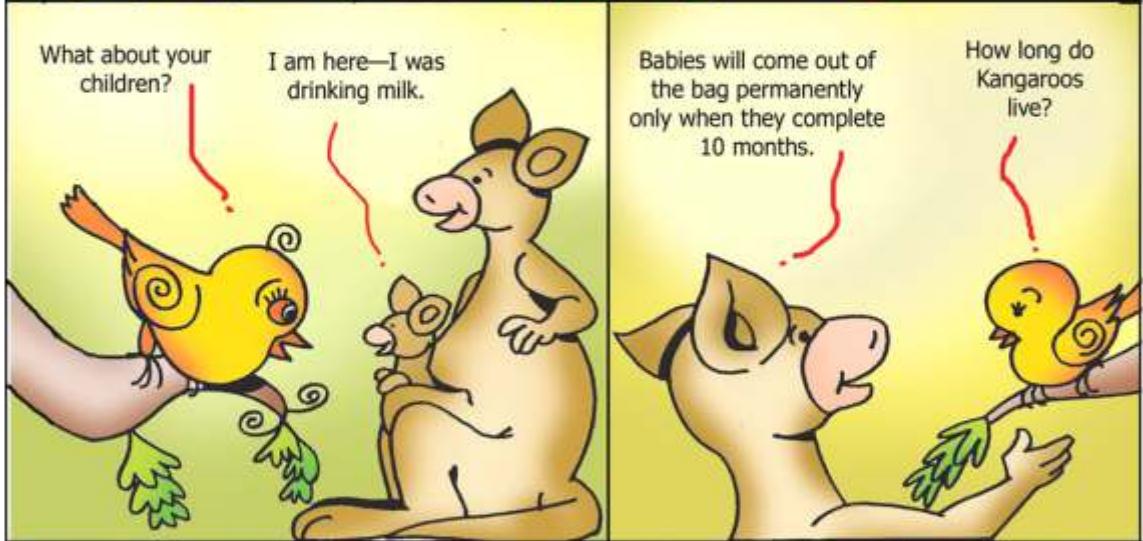
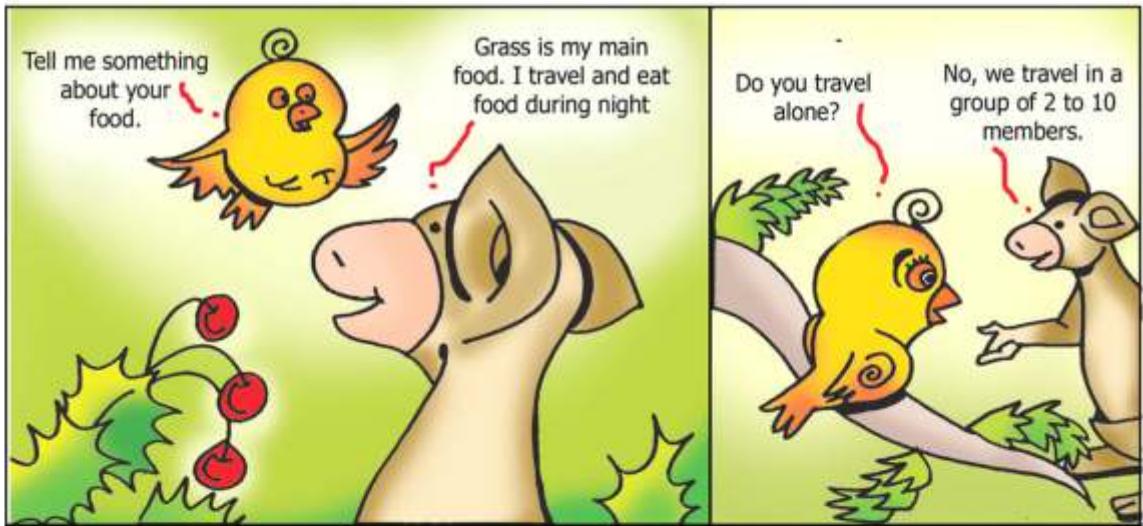


I can travel 48k.m in one hour.

Your forelimbs are shorter than the hind legs...

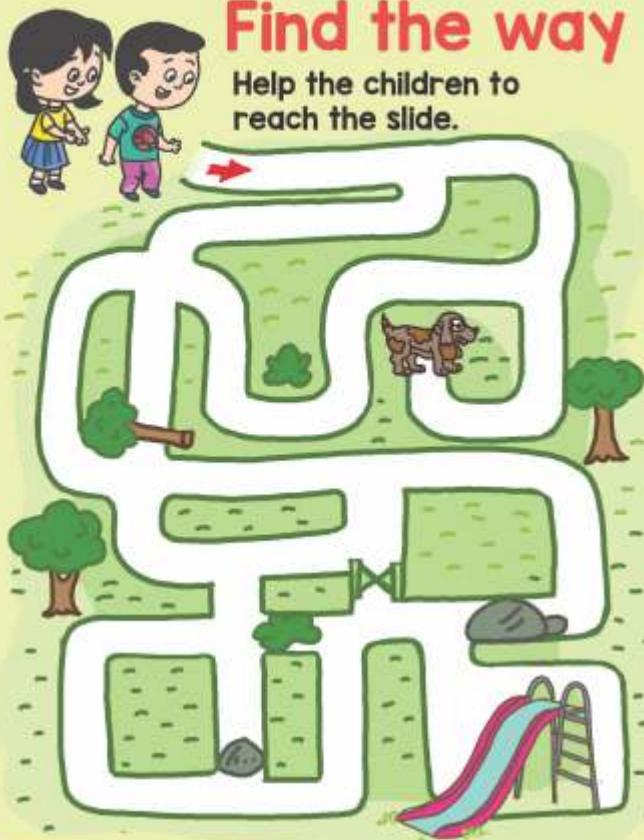
Yes, they are powerful and function just like hands.





Find the way

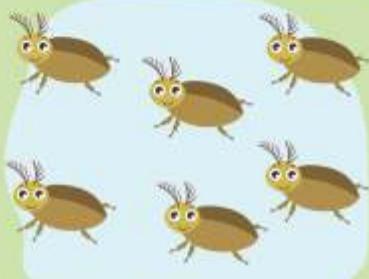
Help the children to reach the slide.



Write and Practise.



Five flowers

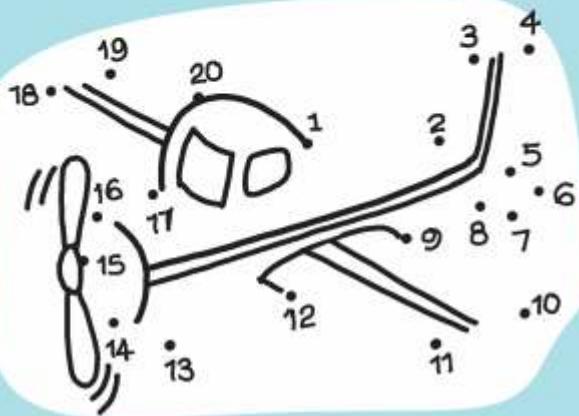


Six bugs

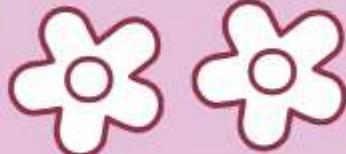
What is it?



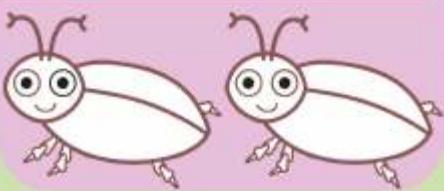
Connect the dots
from 1 - 20 to find
out what it is. Then
colour the picture.



Colour two
flowers red
and one
flower pink.



Colour one bug blue and one bug yellow.





बच्चों का देश द्वारा ऑनलाइन संचालित

बच्चों का वल्लभ

विधा : ड्राइंग विषय : मेरा प्रिय पुष्प

आप भी इस वल्ब के सदस्य बनना चाहे तो 9414343100 पर अपना नाम, पता, उम्र, कक्षा, रुचि, पत्रिका का सदस्यता क्रमांक आदि विवरण लिखाकर ब्हाट्सएप मैसेज करें। इसकी सदस्यता निःशुल्क है। सदस्यता के लिए आयु सीमा 7 से 15 वर्ष है।



अदिति चौखड़ा, कक्षा 8, अहमदाबाद



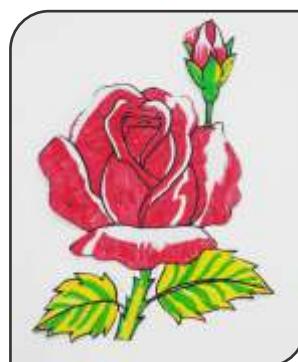
स्नेहा चौखड़ा, कक्षा 10, थाणे



भूमि बिष्ट, कक्षा 10, खाटीमग



भूवि महनोत, नई दिल्ली



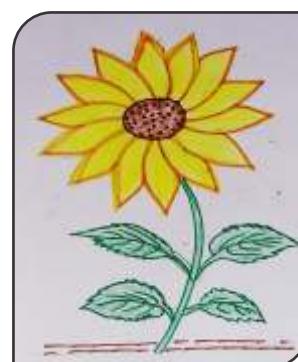
प्रत्यञ्चा शौनक, कक्षा 6, केकड़ी



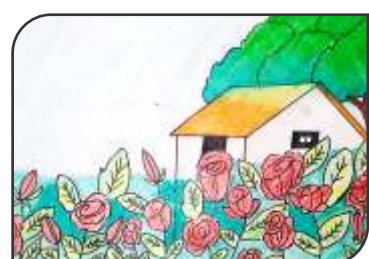
रचना सोनी, कक्षा 10, उदयपुर



गौरल जैन, कक्षा 5, नई दिल्ली



यशस्वी, कक्षा 3, गौरीगंज



अर्चित जैन, कक्षा 7, उदयपुर

मई, 2022

RNI No. 72125/99
Postal Reg. No.: RJ/UD/29-157/2022-24
Posting Date : 27 & 29
Posted at : Kankroli



विनायक दामोदर सावरकर

जन्म : 28 मई, 1883 ■ जिधन : 26 फरवरी, 1966

विनायक दामोदर सावरकर का जन्म महाराष्ट्र के नासिक के निकट भागुर गाँव में हुआ था। ये भारत के महान क्रांतिकारी, स्वतन्त्रता सेनानी, महान समाज सुधारक, इतिहासकार, राष्ट्रवादी नेता तथा विचारक थे। उन्हें प्रायः स्वातन्त्र्यवीर, वीर सावरकर के नाम से सम्बोधित किया जाता है। उनका दृढ़ विश्वास था कि सामाजिक एवं सार्वजनिक सुधार बराबरी का महत्व रखते हैं व एक दूसरे के पूरक हैं। अपने भाषणों व लेखों से इन्होंने समाज सुधार के निरन्तर प्रयास किए।